G20

भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

मध्यांचल दर्पण

अंक –18

पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा

ए-विंग, द्वितीय तल, केन्द्रालय 63/4, संजय प्लेस, आगरा – 282002

दूरभाष : 0562-2523266

ई-मेल-jtcceagra@explosives.gov.in वेबसाइट-www.peso.gov.in

उपलब्धि

दिनांक 09.11.2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा की 79वीं बैठक में कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा को नगर स्थित समस्त केन्द्र सरकार के कार्यलयों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वर्ष 2020-2021 के लिए प्रथम पुरस्कार, वर्ष 2021-2022 के लिए सांत्वना पुरस्कार एवं हिंदी पत्राचार के लिए विशेष पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।

कार्यालयाध्यक्ष श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने श्री एस.नय्यर अली नज़मी, प्रधान आयकर आयुक्त-प्रथम एवं अध्यक्ष, नराकास, आगरा के कर कमलों से प्रथम पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रमाणपत्र ग्रहण किया ।

राजभाषा अधिकारी श्री अशोक कुमार, उप-विस्फोटक नियंत्रक ने श्री तरुण सिंह सैनी, सदस्य सचिव, नराकास, आगरा के कर कमलों से सांत्वना एवं विशेष पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रमाण पत्र ग्रहण किया ।

श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने कार्यक्रम में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की ।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों / विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

राजीव सिंह ठाकुर
अपर सचिव
Rajeev Singh Thakur
Additional Secretary

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY
DEPARTMENT FOR PROMOTION OF
INDUSTRY AND INTERNAL TRADE

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन के अधीनस्थ कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा द्वारा वार्षिक गृह पत्रिका "मध्यांचल दर्पण" (वर्ष 2022-2023) का प्रकाशन किया जा रहा है।

वैसे, आगरा द्वारा प्रकाशित की जाने वाली इस पत्रिका से न केवल कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों की रचनात्मकता में वृद्धि होगी वरन संपूर्ण संगठन में भाषाई सौहार्द का भी प्रचार प्रसार होगा। गृह पत्रिकाएं, कार्यालय के कार्मिकों को भाषा संप्रेषण के सहजतम माध्यम के रूप में उपलब्ध होती हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि गृह पत्रिका का यह अंक कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को भी सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ''मध्यांचल दर्पण'' (वर्ष 2022-2023), संगठन के अन्य कार्यालयों में भी राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने में सहायक होगा। गृह पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को मेरी शुभकामनाएं।

(राजीव सिंह ठाकुर)

Room No. 236, Vanijya Bhawan, Akbar Road, New Delhi-110001, Tel: +91-11-23038863 / 23038885, Email : as-dpiit@gov.in

पी. कुमार
मुख्य विस्फोटक नियंत्रक

P. KUMAR
Chief Controller of Explosives
Tel: 0712-2510103

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
पेट्रोलियम तथा विस्फोटक सुरक्षा संगठन
Petroleum and Explosives Safety Organisation
(पूर्व नाम - विस्फोटक विभाग)
(Formerly - Department of Explosives)
ए ब्लॉक, पाँचवा तल, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स,
"A" Block, 5th Floor, CGO Complex,
सेमिनरी हिल्स, नागपुर 4400 06 (महा.)
Seminary Hills, Nagpur- 440006

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पेट्रोलियम तथा विस्फोटक सुरक्षा संगठन के मध्यांचल, आगरा कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका "मध्यांचल दर्पण" के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

विभागीय राजभाषाई पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के साथ साथ वैचारिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक, रचनात्मक एवं भावनात्मक प्रतिभाओं को उजागर करने के साथ साथ कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों एवं कार्यालय द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में की गई प्रगति का प्रतिबिम्ब होती हैं।

पेसो का मध्यांचल कार्यालय राजभाषाई कार्यों के क्षेत्र में सदैव ही अग्रणी रहा है। पत्रिका प्रकाशन का भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

पत्रिका के सतत् प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं एवं प्रकाशन समिति तथा सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

(पी. कुमार)

E-mail: pkumar@explosives.gov.in | Ph No. : 0712-2510248 | Fax : 0712-2510577

भारत सरकार
Government Of India
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
Ministry Of Home Affairs, Deptt. Of Official Language
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आगरा
Town Official Language Implementation Committee
कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त - 1
Office Of The Principal Commissioner Of Income Tax - 1
आयकर भवन, संजय प्लेस, आगरा-282002
Aaykar Bhawan, Sanjay Place, Agra - 282002

फा.सं.: नराकास (केन्द्रीय)/आगरा/रा.भा./संदेश प्रेषण/2022-23/ दिनांक : 23.01.2023

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा **"मध्यांचल दर्पण"** पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिंदी भारत के अधिकांश लोगों द्वारा समझी एवं बोली जाती है। संविधान में इसे राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। भारत जैसे भौगोलिक एवं भाषाई विविधता वाले देश की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकारी नीतियों और विकास संबंधी योजनाओं को सभी नागरिकों तक सफलतापूर्वक पहुँचाने में एक सेतु का कार्य करती है। ऐसे में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। **"मध्यांचल दर्पण"** पत्रिका अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनशीलता को उजागर करने के साथ-साथ कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग करने में उनकी क्षमता को भी बढ़ाएगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(एस नय्यर अली नजमी)
अध्यक्ष, नराकास
एवं
प्रधान आयकर आयुक्त -1, आगरा

अध्यक्षीय उदबोधन

वार्षिक पत्रिका 'मध्यांचल दर्पण' का नवीनतम अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हर्षान्वित हूँ । राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार प्रसार की दिशा में समर्पित पेसो का मध्यांचल कार्यालय, पत्रिका प्रकाशन की इस गौरवशाली यात्रा को अनवरत जारी रखने में प्रयासरत है । भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा उन्नयन की दृष्टि से समय समय पर जारी आदेशों एवं दिशा निदेशों के अनुपालन के दायित्व के साथ हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार प्रसार में, संगठनों / विभागों द्वारा पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण योगदान है । पत्रिकाओं का प्रकाशन जहाँ एक तरफ कार्मिकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन प्रतिभा को उजागर करने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करता है, वहीं दूसरी तरफ ज्ञान के प्रसार एवं स्वभाषा में सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है।

हिंदी हमेशा से एक समृद्ध भाषा रही है और समय के साथ साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हुए बदलावों एवं विकास के साथ हिंदी ने विभिन्न नए शब्दों को आत्मसात करते हुए स्वयं को और समृद्ध किया है एवं बदलावों को अंगीगृत कर, बदलते परिवेश के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की प्रवृत्ति ने ही हिंदी को आज विश्वपटल पर एक ऊँचे मुकाम पर पहुँचाया है । सूचना प्राद्योगिकी के इस युग में भाषा, साहित्य और संस्कृति का महत्व नि:सन्देह बढ़ा है एवं इसमें राजभाषा हिंदी का एक विशेष योगदान रहा है ।

हमें भी यह प्रयास करना होगा की हम रोजमर्रा के सरकारी कामकाज को मूल रूप से हिंदी में करें एवं लेखन में क्लिष्टता से बचें । अपनी अभिव्यक्ति में सरल सहज एवं आम बोलचाल में प्रयोग होने वाले शब्दों का प्रयोग करें एवं अनुवाद पर निर्भरता को समाप्त करें । इसके लिए सभी को राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए दृढ़संकल्पित होना होगा । सरकारी कार्मिक होने के नाते हम सभी का यह उत्तरदायित्व है कि राजभाषा को अधिक सशक्त, सर्वसुलभ और जनोपयोगी बनाने की दिशा में सरकार की नीतियों और प्रयासों को सार्थक करने में हम अपना पूर्ण योगदान दें ।

पेसो के मध्यांचल परिवार का, पत्रिका प्रकाशन का यह समेकित प्रयास अवश्य ही राजभाषा के विकास की दिशा में सार्थक योगदान देगा। पत्रिका प्रकाशन के इस उत्तरदायित्व के निर्वहन में मध्यांचल के सभी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है। मैं सभी को इस सहयोग के लिए बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि पत्रिका प्रकाशन की इस यात्रा में भविष्य में भी उनका योगदान इसी तरह बना रहेगा।

पत्रिका प्रकाशन समिति के सभी सदस्यों को भी मैं उनके प्रयासों के लिए साधुवाद देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित -

विनोद कुमार मिश्रा
संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
एवं कार्यालयाध्यक्ष
कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक,
मध्यांचल, आगरा

पेसो के मध्य अंचल कार्यालय की ओर से वार्षिक पत्रिका का 18वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ ।

पत्रिकाओं का प्रकाशन, रचनात्मक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होने के साथ साथ विभागीय जानकारी साझा करने का एक सशक्त मंच भी है । इसके माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को भी एक दिशा मिलती है ।

पत्रिका के इस अंक को हमने कहानियों, कविताओं, राजभाषा सम्बन्धी लेखों के साथ साथ स्वास्थ्य जागरूकता सम्बन्धी लेख एवं हिंदी में तकनीकी रचनाओं की विविधता के माध्यम से रोचक एवं स्तरीय बनाने का प्रयास किया है । राजभाषा के प्रचार प्रसार के संवैधानिक उत्तरदायित्व को पूरा करने के साथ साथ यह पत्रिका, मध्यांचल परिवार के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को भी उजागर करती है ।

पत्रिका प्रकाशन एक समेकित प्रयास है । इसमें रचनाकारों / लेखकों द्वारा रचनाएँ प्रदान करना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण होता है उन रचनाओं को एकत्रित कर पत्रिका में उनका स्थान निर्धारित करना एवं पत्रिका के कलेवर को सुसज्जित करना । इस प्रयास में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को सम्पादक मण्डल की ओर से आभार एवं धन्यवाद ।

हमारा यह प्रयास रहता है कि हम पत्रिका के प्रत्येक आगामी अंक को पूर्व के अंक से कुछ बेहतर बनाएं । इस चेष्टा में हम कहाँ तक सफल हो पाए हैं इसका निर्णय आप पाठकगण ही कर पाएंगे । सुधि पाठकों के आलोचनात्मक एवं प्रशंसात्मक बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ।

अशोक कुमार
उप विस्फोटक नियंत्रक
एवं राजभाषा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक
मध्यांचल, आगरा

कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (वर्ष 2022 - 2023)

1- श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक	अध्यक्ष
2- श्री अशोक कुमार मेहता, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक	सदस्य
3- श्री महेश कुमार सामोता, विस्फोटक नियंत्रक	सदस्य
4- श्री अशोक कुमार, उप विस्फोटक नियंत्रक	राजभाषा अधिकारी
5- श्री अनिल कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	सदस्य
6- श्री अनूप कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	सदस्य
7- श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	सदस्य
8- श्री राकेश कुमार वर्मा, आशुलिपिक - II	सदस्य
9- श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक	सदस्य
10- श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक	सदस्य
11-श्रीमती नेहा सिंह, आशुलिपिक - III	सदस्य

पत्रिका प्रकाशन समिति

संरक्षक

श्री विनोद कुमार मिश्रा

संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक

(कार्यालयाध्यक्ष)

सम्पादक	सह-सम्पादिका	कार्यकारी सम्पादक
श्री अशोक कुमार	श्रीमती श्रावणी गांगुली	श्री प्रमोद कुमार शर्मा
उप विस्फोटक नियंत्रक	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	उच्च श्रेणी लिपिक
(राजभाषा अधिकारी)		

सम्पर्क सूत्र

पेट्रोलियम तथा विस्फोटक सुरक्षा संगठन

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक

ए-विंग, द्वितीय तल, केन्द्रालय

63/4, संजय प्लेस, आगरा - 282002 (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष - 0562 : 2523266

ई-मेल - jtcceagra@explosives.gov.in वेबसाइट - http://peso.gov.in

अनुक्रमणिका

क्रम सं	लेख / संकलन	लेखकों / संकलनकर्ताओं के नाम	पृष्ठ संख्या
1.	सरस्वती वन्दना		12
2.	नेशनल पेंशन योजना	श्री मदन मोहन गुप्ता, उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा	13
3.	दुभाषिया प्रविधि	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा	15
4.	पता ही नहीं चला	श्री प्रदीप कुमार पाल, कार्यालय अधीक्षक, आगरा	18
5.	हाइड्रोजन - एक ऊर्जा स्रोत	श्री विनोद कुमार मिश्रा,संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	19
6.	पंचतंत्र	श्री डी.वी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून	21
6.	राजभाषा हिंदी	श्री अनिल कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक, आगरा	21
7.	पदचिह्न	श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा	22
8.	मेन्टेनेन्स या रिपेयर ... अपने और अपनों के लिए क्या चुनते हैं आप ?	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा	23
9.	परिवार	श्री अनूप कुमार शर्मा, कार्यालय अधीक्षक, आगरा	25
10.	युवा कौन	सुश्री प्राची, पुत्री श्री देवनाथ, उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा	25
11.	हिंदी	श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा	26
12.	एक बार फिर	श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा	27
13.	सपनों में रख आस्था	श्री प्रवेश मोर, निम्न श्रेणी लिपिक, आगरा	28
14.	छोटी छोटी परन्तु महत्वपूर्ण बातें	श्री प्रदीप कुमार कनौजिया, वाहन चालक - I, आगरा	29
15.	वर्तमान समय में भारतीय बाजारों में हिंदी का वर्चस्व (संकलन)	श्री मनोज कुमार, सहायक, आगरा	29
16.	माँ	श्री सचिन कुमार शर्मा, निम्न श्रेणी लिपिक, आगरा	35
17.	अच्छा स्वास्थ्य एवं उपाय	सुश्री लता, पुत्री श्री प्रकाश चन्द, सहायक, आगरा	36
18.	कविता (संकलन)	श्री रामकृष्ण दुबे, आशुलिपिक ग्रेड III, आगरा	36
19.	बोलती आँखें	श्री विकास उमराव, एमटीएस, आगरा	37
20.	सूरत (गुजरात) में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता		38
21.	राजभाषा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें		38
22.	कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक,आगरा में आयोजित राजभाषायी एवं विविध गतिविधियां		39
23.	कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, इलाहाबाद में आयोजित राजभाषायी एवं विविध गतिविधियां		43
24.	कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में आयोजित राजभाषायी एवं विविध गतिविधियां		50

पत्रिका में अभिव्यक्त रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है

सरस्वती वंदना

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, हे शारदे माँ
अज्ञानता से हमें तारदे माँ हे शारदे माँ..।।

तू स्वर की देवी, ये संगीत तुझसे, हर शब्द तेरा है, हर गीत तुझसे
हम है अकेले, हम है अधूरे, तेरी शरण हम, हमें प्यार दे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तारदे माँ।।

मुनियों ने समझी, गुनियों ने जानी, वेदोंकी भाषा, पुराणों की बानी
हम भी तो समझे, हम भी तो जाने, विद्या का हमको अधिकार दे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तारदे माँ।।

तू श्वेतवर्णी, कमल पर विराजे, हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे
मनसे हमारे मिटाके अँधेरे, हमको उजालों का संसार दे माँ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तारदे माँ।।

शारदे माँ, हे शारदे माँ, अज्ञानता से हमें तारदे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, हे शारदे माँ, हे शारदे माँ।।

नेशनल पेंशन योजना (एनपीएस)

मदन मोहन गुप्ता,
उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा

जैसा कि हम सब जानते हैं हमारे देश में काफी ऐसे लोग हैं जिन्हें रिटायरमेंट लेने के बाद अपने खर्चे के लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है ऐसे में उन्हें काफी कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है इसी चीज को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार द्वारा **नेशनल पेंशन योजना** को आरंभ किया गया है। इस योजना के तहत देश के सभी नागरिकों को रिटायरमेंट के बाद अपने खर्चों के लिए किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना होगा देश के नागरिक आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व सशक्त बनेंगे।

दिनांक- 01.01.2004 के बाद से भर्ती होने वाले केन्द्रीय कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से नेशनल पेंशन स्कीम में योगदान करना होता है। इसमें प्रतिमाह उनके वेतन का 10 प्रतिशत भाग उनके एनपीएस खाते में जमा किया जाता है तथा कर्मचारी के वेतन की 14 प्रतिशत राशि का योगदान सरकार द्वारा किया जाता है।

इस योजना के अंतर्गत सरकारी कर्मचारियों को भौतिक रूप से पंजीकृत किया जाता था जो केंद्रीय रिकॉर्ड कंपनी एजेंसी या फिर सरकार के नोडल कार्यालयों में ऑनलाइन मॉड्यूल के माध्यम से किया जाता था। तथा अब पेंशन फंड नियामक और विकास परिकलन द्वारा नेशनल पेंशन स्कीम के अंतर्गत पंजीकरण करने के ऑनलाइन सुविधा प्रदान की जा रही है। इस सुविधा के तहत कर्मचारी अपना एनपीएस अकाउंट ऑनलाइन खोल सकते हैं। एनपीएस सीआरए द्वारा होस्ट किया जाएगा जिसके तहत सब्सक्राइबर बहुत आसानी से अपना पंजीकरण करवा सकते हैं और अपना योगदान दे सकते हैं।

e-nps के अंतर्गत सब्सक्राइबर अपना पंजीकरण बहुत आसानी से करवा सकते हैं और अपना PRAN नंबर भी जनरेट कर सकते हैं। जिनका अकाउंट एनपीएस में पहले से ही खुला हुआ है वह अपना योगदान दे सकते हैं तथा अपना टायर टू अकाउंट भी खुलवा सकते हैं। एनपीएस में योगदान देने के लाभ कुछ इस प्रकार हैं-

- अकाउंट खुलवाने का खर्च नहीं होगा क्योंकि पूरी प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया है।
- नांमाकन की पेपरलेस प्रक्रिया होगी।
- फॉर्म भरते में जो गलतियां होती हैं उन में कमी आएगी क्योंकि कर्मचारी द्वारा उनका फॉर्म स्वयं भरा जाएगा।
- ज्यादा से ज्यादा एनपीएस अकाउंट आसानी से खुल पाएंगे
- नोडल अधिकारियों का काम बेहद आसान हो जाएगा।

नेशनल पेंशन योजना (एनपीएस) को हमारे पेंशन फंड के नियामक के रूप में पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) द्वारा संचालित किया जाता है. एक बार अभिदाता(ओं) की आयु 60 वर्ष पूरी हो जाने के पश्चात्, वृद्धावस्था में पेंशन के रूप में आय सुरक्षित करता है।

पीएफआरडीए (पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण) की पेंशन प्रणाली के तहत एनपीएस एक स्वैच्छिक योजना है, जो 18-60 वर्ष के आयु वर्ग के सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध है।

1. यह योजना 01.05.2009 से लागू है।
2. इसका उद्देश्य लंबी अवधि में बाजार संचालित रिटर्न के साथ वृद्धावस्था में पेंशन प्रदान करना है
3. बैंक की नामित शाखाएं यानी प्वाइंट ऑफ प्रेजेंस-सर्विस प्रोवाइडर (पीओपी-एसपी) आवेदन पत्र स्वीकार करते हैं और स्थायी सेवानिवृत्ति खाता संख्या (पीआरएएन) बनाने के लिए सब्सक्राइबर को सेंट्रल रिकॉर्ड कीपिंग एजेंसी (सीआरए) के साथ पंजीकृत करवाते हैं।

4. भविष्य के सभी लेनदेन के लिए पीआरएएन(प्रान) का उल्लेख किया जाएगा।
5. दो तरह के खाते होते हैं- टियर I और टियर II।
6. टियर- I खाता वह है, जिसमें ग्राहक सेवानिवृत्ति के लिए अपनी बचत को 60 वर्ष की आयु तक गैर-निकासी योग्य खाते में योगदान कर सकते हैं और अपने शेष जीवन के लिए पेंशन प्राप्त कर सकते हैं।
7. टियर I के मामले में, खाता खोलते समय न्यूनतम अंशदान रुपए 500/-, प्रति अंशदान न्यूनतम राशि रुपए 500/-, वित्तीय वर्ष के अंत में न्यूनतम खाता शेष रुपए 6000/-, एक वर्ष में योगदान की न्यूनतम संख्या - 1
8. ग्राहक 60 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद योजना से बाहर निकल सकते हैं। उसे संचित पेंशन धन का 40% अनिवार्य रूप से वार्षिकीकरण करना होगा। 100% कॉर्पस का वार्षिकीकरण करने का विकल्प भी उपलब्ध है।
9. टियर-II खाता एक स्वैच्छिक बचत खाता प्रपत्र है, जिसमें ग्राहक जब चाहें अपनी बचत निकालने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
10. एनपीएस द्वारा अनिवार्य रूप से कवर किए गए सरकारी कर्मचारियों सहित भारत के सभी नागरिकों को टियर II खाते की सुविधा 1 दिसंबर 2009 से दी जा रही है।
11. टियर-II खाता मौजूदा स्थायी सेवानिवृत्ति खाता (पीआरए) धारकों के लिए उपलब्ध होगा, जो टियर-I के अतिरिक्त एवं ऊपर निवेश के माध्यम से बचत की सुविधा देता है । टियर II खाता खोलने के लिए पूर्व में एक सक्रिय टियर I खाता होना जरुरी है।
12. टियर II के संबंध में खाता खोलने और वार्षिक रखरखाव के लिए कोई अतिरिक्त सीआरए शुल्क नहीं लगाया जाएगा। हालांकि, सीआरए टियर II में प्रत्येक ट्रांजैक्शन के लिए अलग से चार्ज करेगा, जो कि टीयर I में निर्धारित ट्रांजेक्शन चार्ज स्ट्रक्चर के अनुरूप होगा।
13. टियर II में निकासी की संख्या की कोई सीमा नहीं है।
14. टियर I और टियर II में अलग-अलग नामांकन और योजना अधिमान की सुविधा है।
15. टीयर II से टियर I में बचत के एकतरफा हस्तांतरण की सुविधा है।
16. टियर II खाता खोलने के लिए बैंक विवरण अनिवार्य होगा।
17. टियर II खाता खोलने के लिए अलग से केवाईसी की आवश्यकता नहीं होगी; केवल पहले से मौजूद टियर I खाते की आवश्यकता है।
18. टियर II के मामले में - खाता खोलते समय न्यूनतम अंशदान -रु.1000/-, प्रति अंशदान न्यूनतम राशि - रु. 250/-, वित्त वर्ष के अंत में न्यूनतम खाता शेष-रु. 2000/-, एक वर्ष में योगदान की न्यूनतम संख्या - 1
19. टियर I और टियर II दोनों के लिए समग्र आवेदन के मामले में, खाता खोलने के समय न्यूनतम योगदान रु. 1500/- होना चाहिए।
20. अभिदाता(ओं) को सीआरए द्वारा स्थायी सेवानिवृत्ति खाता संख्या (पीआरएएन) के बारे में सूचित किया जाएगा। सीआरए द्वारा प्रान प्रदान करने के बाद, ग्राहक अपने चुने हुए पीओपी-एसपी के माध्यम से अपनी सदस्यता जमा करना शुरू कर सकते हैं।
21. सीआरए सभी सब्सक्रिप्शन का रिकॉर्ड रखता है।
22. एक सब्सक्राइबर के पास अपने निवेश के लिए तीन विकल्प होते हैं (सक्रिय विकल्प):

    क- उच्च जोखिम उच्च रिटर्न (एसेट क्लास ई): मुख्य रूप से इक्विटी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश।

    ख- मध्यम जोखिम मध्यम रिटर्न (एसेट क्लास सी): सरकारी प्रतिभूतियों के अलावा अन्य ऋण प्रतिभूतियों में निवेश।

    ग- कम जोखिम कम रिटर्न (एसेट क्लास जी): सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश।

1. सक्रिय विकल्प का चयन करने वाला ग्राहक उपलब्ध परिसंपत्ति वर्ग "ई", "जी", और "सी" का चयन कर सकता है। हालांकि सभी चयनित परिसंपत्ति वर्गों में प्रतिशत आवंटन का योग 100 के बराबर होना चाहिए। इक्विटी (ई) के तहत आवंटन 50% से अधिक नहीं हो सकता है।

2. सब्सक्राइबर ऑटो चॉइस - लाइफसाइकल फंड का विकल्प भी चुन सकते हैं, जिन्हें अपने एनपीएस निवेश को प्रबंधित करने के लिए आवश्यक ज्ञान नहीं है। इस विकल्प के साथ, सिस्टम निवेशक की उम्र के आधार पर तीन परिसंपत्ति वर्गों के बीच निवेश के मिश्रण पर फैसला करेगा। इस विकल्प में जीवन चक्र निधि में निवेश किया जाएगा। यहां, तीन परिसंपत्ति वर्गों में निवेश किए गए फंड का प्रतिशत एसएसई एक पूर्व परिभाषित पोर्टफोलियो द्वारा निर्धारित किया जाएगा। प्रवेश की न्यूनतम आयु (18 वर्ष) पर, ऑटो विकल्प में पेंशन धन का 50% "ई" वर्ग में, 30% "सी" वर्ग में और 20% "जी" श्रेणी में निवेश करना होगा। निवेश के ये अनुपात सभी योगदानों के लिए तब तक स्थिर रहेंगे जब तक कि प्रतिभागी 36 वर्ष की आयु तक नहीं पहुंच जाता। 36 वर्ष की आयु से, "ई" और "सी" परिसंपत्ति वर्ग में भार सालाना कम हो जाएगा और "जी" वर्ग में सालाना भार बढ़ जाएगा। जब तक यह "ई" में 10%, "सी" में 10% और 55 वर्ष की आयु में "जी" वर्ग में 80% तक पहुंच जाता है।

नागरिकों के बेहतर व सुरक्षित भविष्य हेतु नेशनल पेंशन योजना आज के समय की अनिवार्यता बन गई है। अत: अपनी आय का कुछ हिस्सा एनपीएस में जमा करके निश्चित समय में बड़ी धनराशि प्राप्त की जा सकती है।

दुभाषिया प्रविधि

(भारतीय अनुवाद परिषद - अंक 165 से साभार)

श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

संचार और आवागमन के साधनों के अत्यधिक विकास के कारण समूचा विश्व जैसे सिमट गया है । परिणामस्वरूप विविध भाषाओं और संस्कृतियों के आदान प्रदान तथा समग्र संसार के अन्यान्य लोगों के बीच संवाद की अनेक स्थितियाँ निरन्तर बनी रहती हैं । चूंकि सम्पूर्ण विश्व में लगभग 2,746 भाषाएँ प्रमुख रूप से बोली जाती हैं और यह संभव नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति कुछेक भाषाओं से अधिक का ज्ञाता हो अत: भिन्न भाषा-भाषियों के बीच संवाद की स्थिति कायम रखने के लिए दुभाषियों की आज महती आवश्यकता है ।

दुभाषिया के लिए अंग्रेजी में 'इन्टरप्रेटर' शब्द मिलता है, जिसका तात्पर्य है अर्थात् जो व्याख्या कर सके या जो त्वरित भाषांतरण कर सके । 'हिंदी में 'इंटरप्रेटर' के लिए 'दुभाषिया' अथवा 'आशु अनुवादक' शब्द प्रचलित है ।

'दुभाषिया' शब्द दु+भाषिया के मेल से बना है । 'दु' दो का संक्षिप्त रूप है । 'भाषिया' शब्द से तात्पर्य है - बोलने वाला । अर्थात् दुभाषिया वह है जो दो भाषाएँ जानने वाला तथा बोलने वाला हो और द्विभाषा-भाषियों के मध्य त्वरित अर्थांतरण और भाषांतरण करने में सक्षम हो ।

दुभाषिया प्रविधि

दो विभिन्न भाषा-भाषियों के विचारों को एक-दूसरे तक पहुँचाने के लिए मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति दुभाषिया होता है। 'दुभाषिया' का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह एक व्यक्ति द्वारा कही गई बाद को, उचित शब्दों एवं वाक्यों का चयन करते हुए, दूसरे भाषा-भाषी व्यक्त अथवा समुदाय तक पहुँचाए । इस प्रक्रिया को क्रियान्वित करने के लिए दुभाषिए को निम्नलिखित प्रविधि अपनानी होती है-

1. **<u>अर्थग्रहण</u>** : प्रथम व्यक्ति द्वारा बोले गए वाक्य के आशय को भली भाँति समझना ।

   भाषा चयन : प्रथम व्यक्ति की बात को दूसरे व्यक्ति को समझाने के लिए उपयुक्त शब्दों की खोज करना महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि एक शब्द के विभिन्न पर्याय होते हैं । प्रथम व्यक्ति के द्वारा कहे गए शब्द के लिए द्वितीय व्यक्ति की भाषा में कौन सा शब्द सटीक रहेगा, इसका ज्ञान अत्यन्त अनिवार्य है । इसके बिना अर्थ का अनर्थ हो जाने की सम्भावना रहती है । जैसे खुशगवार मौसम में हवा की भूमिका देखकर प्रथम व्यक्ति ने हिंदी में अपना भाव व्यक्त किया - 'क्या प्यारी हवा चल रही है' ।

   उपर्युक्त वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद करते समय दुभाषिए को यह निर्णय लेना पड़ेगा कि 'हवा' के पर्याय के रूप में प्रचलित 'Air' 'Wind' या 'Breeze' इसमें से किस शब्द का चयन करे ।

2. **<u>त्वरित भाषांतरण</u>** : दुभाषिया का कार्य आशु अनुवाद का है इसलिए उसमें इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह त्वरित गति से भाषांतरण कर सके । इसके साथ दुभाषिया से यह भी अपेक्षा है कि उसे अत्यन्त तीव्रता के साथ मन ही मन किए गए अनुवाद को जाँच लें ।

3. **<u>संप्रेषण</u>** : भाषांतरण को श्रोता समुदाय (लक्ष्य - स्रोत) तक उपयुक्त भाषा में संप्रेषित करना ही संप्रेषण की प्रक्रिया है ।

4. **<u>लक्ष्य भाषी की प्रतिक्रिया से अवगत कराना</u>** : बात को संप्रेषित कर देने से ही दुभाषिए का कार्य पूर्ण नहीं होता । उससे अपेक्षा की जाती है कि प्रथम वक्ता को दूसरे वक्ता की प्रतिक्रिया से भी अवगत कराए ।

उपर्युक्त प्रक्रियाओं में दुभाषिया के हाव-भाव, वाक्य का उतार चढ़ाव, उच्चारण आदि भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं ।

<u>दुभाषिया के गुण -</u> दुभाषिया कर्म को सुचारू रूप से पूर्ण करने के लिए दुभाषिया में निम्नलिखित गुणों का होना अनिवार्य है :

1. **<u>आकर्षक व्यक्तित्व</u>** : अच्छी, स्वस्थ, सुन्दर वस्तु एवं व्यक्ति सबको अच्छे लगते हैं । संप्रति बाजार में अपने उत्पादन के प्रचार-प्रसार तथा क्रय-विक्रय को बढ़ाने के लिए जिस ग्लैमर को अपनाया जा रहा है उसके कारण दुभाषिया के लिए आकर्षक व्यक्तित्व का होना अनिवार्य हो गया है । विदित हो कि दुभाषिया कर्म एक व्यवसाय के रूप में पनप रहा है । ऐसे में दुभाषिया कर्म करने वाले व्यक्ति के आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ग्राहकों का आकर्षित होना स्वाभाविक है इसलिए दुभाषिया को साफ-सुथरा रहने के साथ-साथ चुस्त गम्भीर किंतु मृदुल एवं हाजिरजवाब होना चाहिए । चलने, मिलने, बातचीत करने के साथ-साथ कपड़े पहनने आदि की शैली से भी व्यक्ति की अभिरुचि प्रकट होती है और व्यक्तित्व निखरता है, इसलिए आकर्षक व्यक्तित्व दुभाषिया की पहली अनिवार्यता है ।

2. **<u>लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार</u>** : लक्ष्य भाषा से तात्पर्य उन विशेष भाषाओं से है जिनके बीच द्विभाषिया को मध्यस्थता करनी होती है । पूर्वोल्लिखित है कि यह बहुत दुष्कर है कि प्रत्येक व्यक्ति समस्त भाषाओं का जानकार हो । इसलिए जिन विभिन्न भाषा भाषियों के बीच दुभाषिया को मध्यस्थता करनी है, उनकी भाषाओं पर उसे समान अधिकार होना चाहिए ।

3. **<u>विषय की गूढ़तम जानकारी</u>** : अधिकाँशत: देखा जाता है कि दो विभिन्न भाषा-भाषियों के एक साथ मिलने का कोई विशेष प्रयोजन होता है। यह प्रयोजन व्यावसायिक, राजनितिक, सांस्कृतिक आदि सन्दर्भों में हो सकता है । इसलिए दुभाषिया कर्म करने वाले के लिए यह अनिवार्यता है कि उसे संबंधित बैठक के प्रयोजनीय विषय की पूर्ण जानकारी हो क्योंकि यह संभव नहीं है कि साहित्य के विषय का विद्वान चिकित्सकों अथवा व्यापारियों के बीच मध्यस्थता कर सके । कारण, यह आवश्यक

नहीं है कि उसे उस विषय में प्रयुक्त होने वाली विशेष इसलिए पारिभाषिक शब्दावली का बोध हो । इसलिए दुभाषिया से अपेक्षा की जाती है कि वह जिस विषय के व्यक्तियों के बीच मध्यस्थता कर रहा है, उस विषय की उसे पूर्ण जानकारी होनी चाहिए ।

4. **<u>शब्दों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की जानकारी</u>** : दुभाषिया के लिए यह अत्यन्त अनिवार्य है कि वह लक्ष्य भाषाओं के सामाजिक-सांस्कृति परिवेश से भली भाँति अवगत हो, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र और क्षेत्र की अपनी जातीय, भाषिक संस्कृति होती है। अगर दुभाषिया को इसका बोध नहीं है तो वह अपने कर्तव्य का निर्वाह भलीभाँति नहीं कर सकता है । उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि अंग्रेजी में 'Dear Madam' अथवा 'you' शब्द का प्रयोग सामान्य बात है किंतु हिंदी क्षेत्र में इसका भाषान्तरण 'प्रिय श्रीमती जी' और 'तुम' उचित नहीं है क्योंकि हिंदी में पद आयु के अनुसार संबोधन दिए जाते हैं । 'प्रिय श्रीमती जी' का प्रयोग अगर पति द्वारा किया गया है तो भारतीय या हिंदी क्षेत्र की मूल्यवत्ता के अनुसार वह उचित है किंतु अन्य के द्वारा 'प्रिय महोदया' ही उचित होगा । इसी प्रकार अंग्रेजी के के समकक्ष, हिंदी में आयु के अनुसार बड़े के लिए 'आप' और समवयस्क के लिए 'तुम' शब्द का प्रचलन है । यदि दुभाषिया इस सामाजिक-संस्कृति का बोध नहीं रखेगा तो दोनों भाषा-भाषियों के बीच दरार उत्पन्न हो जाना संभव है ।

5. **<u>विवेकशीलता</u>** : विवेकशीलता होना दुभाषिया के लिए अत्यन्त आवश्यक है । अगर दुभाषिया में अपने विवेक से उचित निर्णय लेने की क्षमता है तो वह बिगड़ती हुई स्थिति को भी संवार सकता है । शब्दों के चयन में यह विवेक अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है । अगर विभिन्न पदों पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की बैठक हो रही है और हिंदी भाषी किसी उच्च अधिकारी के लिए दुभाषिया, अंग्रेजी भाषी कनिष्ठ अधिकारी के द्वारा प्रयुक्त 'you' शब्द का भाषांतरण 'तुम' कर देता है तो इसका गलत प्रभाव पड़ सकता है ।

   इसी प्रकार एक पक्ष द्वारा गुस्से में कही गई बात को दूसरे तक पहुँचाने के समय दुभाषिया के विवेक की परीक्षा होती है क्योंकि उसके द्वारा किया गया एक भी शब्द का गलत प्रयोग आग में घी का काम करेगा । हालाँकि दुभाषिया को मौलिकता की स्वतन्त्रता नहीं होती किन्तु प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया उसके निजी बोध पर निर्भर है ।

6. **<u>प्रथम पुरुष के स्थान पर तृतीय पुरुष का प्रयोग</u>** : यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि कभी कभी एक व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए कही गई बात दुभाषिया द्वारा प्रथम पुरुष में कहे जाने पर हास्यास्पद बन जाती है । जैसे कि रमेश ने फोन पर सूचित किया, ''मेरी पत्नी की तबियत खराब होने के कारण मैं कार्यालय नहीं आ पाऊँगा'' । दुभाषिया अगर उसे भाषान्तरित करे कि Ramesh informed that I will not come to office because of my wife's illness.... यह हास्यास्पद होगा । अत: दुभाषिया को भाषान्तरण में यह ध्यान रखना चाहिए कि वह तृतीय पुरुष में बात करे।

7. **<u>स्पष्ट उच्चारण एवं शब्दों की उचित गति</u>** : अच्छा उच्चारण कर्णप्रिय होता है । दुभाषिया कर्म एक व्यवसाय है इसलिए मधुर एवं स्पष्ट स्वर ग्राहक को आकर्षित करता है । स्पष्ट उच्चारण के अभाव में कई बार शब्दों का अर्थ बदल जाता है । जैसे कि खाना हाथी से बनाना है । वाक्य में उच्चारण की अस्पष्टता से अर्थ बदल गया जबकि वास्तविक वाक्य है - खाना हाथ ही से बनाना है ।

8. **<u>त्वरित भाषांतरण की क्षमता अथवा आशु-अनुवाद में प्रवीणता</u>** : लिखित अनुवाद करने वाले अनुवादक के पास अपने अनूदित पाठ की जाँच के लिए पर्याप्त अवसर होता है परन्तु द्विभाषिया के पास इसका कोई अवकाश नहीं होता । उसे कुछ ही पल में अपना निर्णय लेकर अपनी बात को कहना होता

है । अत: यहाँ उसकी बौद्धिकता की परीक्षा होती है । यदि दुभाषिया उचित समय पर उचित शब्दों को नहीं खोज पाएगा तो यह उसकी कमी मानी जाएगी । इसलिए दुभाषिया के पास शब्दों के विशाल भण्डार के साथ-साथ त्वरित गति से भाषांतरण की क्षमता भी होनी चाहिए ।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर कोई भी व्यक्ति एक सफल द्विभाषिक बन सकता है । संप्रति दुभाषिया कर्म की उपयोगिता को समझते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों में विदेशी तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं का ज्ञान कराने के साथ-साथ द्विभाषिया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं । पर्यटन, होटल व्यवसाय, प्रौद्योगिकी, राजनीतिक क्षेत्रों, सरकारी दूतावासों एवं कार्यालयों में भी दुभाषिया की आवश्यकता होती है । । संप्रति दुभाषिया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम रोजगारपरक पाठ्यक्रम कहे जाते हैं । इन पाठ्यक्रमों के क्रियाशील होने पर विश्व प्रौद्योगिक रूप से ही नहीं अपितु वैचारिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक हो जाएगा ।

पता ही नहीं चला

प्रदीप कुमार पाल
कार्यालय अधीक्षक, आगरा

उन सभी को एक छोटी से रचना समर्पित कर रहा हूँ जिन्होंने लगभग 21 से 55 वर्ष की आयु अपने परिवार के लिए कमाने में व्यतीत कर दिए ।

कैसे कटा 21 से 55 तक का सफर, पता ही नहीं चला ।
क्या पाया, क्या खोया, क्यों खोया, पता ही नहीं चला ।
बीता बचपन, गई जवानी, कब आया बुढ़ापा, पता ही नहीं चला ।
कब बेटे थे, कब दामाद और कब ससुर हो गए, पता ही नहीं चला ।
कब पापा से नानू व दादू बन गए, पता ही नहीं चला ।
कोई कहता है सठिया गए औ' कोई कहता है छा गए,
क्या सच है क्या झूठ, पता ही नहीं चला ।
पहले माँ-बाप की चली, फिर चली बीवी की,
फिर बच्चों की चली, पर अपनी कब चली, पता ही नहीं चला ।
बीवी कहती है अब तो समझ जाओ, अब तक क्या नहीं समझा, पता ही नहीं चला ।
दिल कहता जवान हूँ मैं, उम्र कहती है नादान हूँ मैं,
इस चक्कर में कब घुटने घिस गए, पता ही नहीं चला ।
झड़ गए गाल, लटक गए गाल,
लग गया चश्मा, कब बदली सूरत, पता ही नहीं चला ।
समय बदला, मैं बदला, बदल गई मित्र मण्डली भी,
कितने छूट गए, कितने रह गए मित्र, पता ही नहीं चला ।
कल तक अठखेलियाँ करते थे मित्रों के साथ,
कअ सीनियर सिटीजन बन गए, पता ही नहीं चला ।
बहु, जमाई, नाती-पोते, खुशियाँ लाए,
कब मुस्कुराई उदास जिन्दगी, पता ही नहीं चला ।
जी भर कर जी लो यारों, प्यारों,
फिर न कहना कि ..... पता ही नहीं चला ।।

हाइड्रोजन - एक ऊर्जा स्रोत

विनोद कुमार मिश्रा
संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा

हाइड्रोजन धरती का एक नायब तत्व है। आवर्त सारणी में इसे पहला स्थान प्राप्त है। एक हजार क्यूबिक फीट हाइड्रोजन का वजन ढाई किलो (2.41 कि.ग्रा) से कम होता है। जबकि एक हजार क्यूबिक फीट हवा का वजन करीब करीब 16 कि.ग्रा. होता है। पृथ्वी के वातावरण में छूटते ही करीब-करीब गुरूत्वाकर्षण के खुले आसमान के शिखर पर पहुँच जाता है, इसलिए वातावरणीय गैसों में इसकी मात्रा बमुश्किल 0.0005 प्रतिशत तक ही मिल पाती है।

लेकिन अगर किसी को दोस्ती करनी है तो हाइड्रोजन से सीखें। यह धरती पर यौगिक के तौर पर प्राय: हर जगह विद्यमान है। सम्पूर्ण जगत में पानी, कार्बनिक अणुओं में सर्वत्र हाइड्रोजन विद्यमान है । चलिए हम अपनी दिनचर्या में प्रयुक्त वस्तुओं में हाइड्रोजन की उपस्थिति का आकलन करते हैं। बिस्तर पर पड़े चद्दर पर, कॉटन में हाइड्रोजन, हम उठकर अपनी पादुकाएँ ढूंढते हैं - उनमें हाइड्रोजन। ब्रश करने के लिए प्रयास किया जाए - ब्रश में हाइड्रोजन, टूथपेस्ट में हाइड्रोजन, पानी में हाइड्रोजन, प्राय: सभी भोज्य पदार्थों में हाइड्रोजन, अपना सम्पूर्ण शरीर ही हाइड्रोजन के यौगिक से ही बना है। इसके यौगिक बहुत स्थाई प्रवृत्ति के होते हैं। दोस्ती यह हर प्रकार से कर लेता है। यानि दान देकर या दान लेकर या अपना और उसका; सब हमारा है और आपका भी है; ऐसा करके। मानव जगत को इसके चरित्र से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

आजकल हाइड्रोजन की चर्चा जोरों पर है। हाइड्रोजन मिशन चल रहा है। अपना देश विश्व के ग्रीन मिशन में अपनी अग्रणी भूमिका अदा कर रहा है। नेट जीरो की बातें चल रही हैं। प्रकृति / वातावरण में विद्यमान कार्बन डायआक्साइड और अन्य टॉक्सिक गैसों को कम करने का प्रयास चलाया जा रहा है। ऊर्जा के ऐसे स्रोतों का विकास किया जा रहा है जिससे कि CO_2 एवं NO, NO_2 जैसी गैसें न निकलें और इस प्रयास में हाइड्रोजन रामबाण साबित हो रहा है। पारम्परिक ऊर्जा के स्रोत जैसे कोयला, क्रूड ऑयल (पेट्रोल/डीजल) या प्राकृतिक गैस जिनसे अब तक ऊर्जा मिल रही थी, उनका विकल्प ढूँढा जा रहा है। कारण है कि वातावरण को बचाया जाए और भविष्य के लिए ऊर्जा के अन्य स्रोत बनाए जाएं जो अनवरत चलते रहें क्योंकि पारम्परिक स्रोत समाप्त हो रहे हैं।

चूँकि हाइड्रोजन को एक गैर पारम्परिक ऊर्जा का अक्षय स्रोत समझा जा रहा है, अतएव हम यह प्रयास करते हैं कि यह स्रोत कितना सस्ता या महंगा है और भविष्य में इस दिशा में प्रगति को रेखांकित करने का प्रयास करते हैं । सर्वप्रथम इसकी तुलना उपलब्ध CNG या संपीड़ित प्राकृतिक गैस से करना प्रारम्भ करते हैं।

हाइड्रोजन की ऊर्जा, सीएनजी की ऊर्जा से करीब करीब 30% होती है। यानि 30 किलोग्राम सीएनजी जलाने से जो ऊर्जा प्राप्त होती है, उतनी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए 100 किलोग्राम H_2 जलाना पड़ेगा। यदि यह तुलना आर्थिक तथ्यों के आधार पर की जाए तो ब्लूमबर्ग की एक विवेचना के अनुसार हाइड्रोजन से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की कीमत CNG से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की 10 गुनी है । इसमें हाइड्रोजन का उत्पादन, भण्डारण एवं वितरण / परिवहन शामिल है।

हाइड्रोजन का भण्डारण भी एक अत्यन्त जटिल विषय है और सुरक्षा की दृष्टि से सम्भवत: सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण । इसके तकनीकी रहस्यों पर भी चर्चा कर ली जाए।

सबसे पहले हम हाइड्रोजन उत्पन्न (produce) करने के तरीकों पर एक फौरी निगाह डालते हैं तथा उत्पन्न हाइड्रोजन वातावरण के लिए कितना ठीक है, इसका विश्लेषण करते हैं।

<u>रासायनिक एवं पेट्रोलियम संयंत्र रिफायनरी</u>

हाइड्रोकार्बन सोर्स से हाइड्रोजन बन सकती है किन्तु यह घाटे का सौदा है । इस प्रक्रिया में ग्रीन हाउस गैस निकलेगी । ऐसी स्थिति में सीएनजी जब स्वयं उपयोग में लाया जा सकता है तो उसे हाइड्रोजन में कन्वर्ट कर ऑटोमोटिव फ्यूल की तरह उपयोग करना, मात्र दिखावा है ।

आईओसीएल ने दिल्ली में सीएनजी से हाइड्रोजन बनाकर इस तरह का एक प्रयोग किया है और उस हाइड्रोजन को पुन: सीएनजी में 10% तक मिश्रित कर Automotive Fuel के चरित्र में परिवर्तन किया है । उनका दावा था कि दिल्ली में प्रदूषण कम करने में यह प्रयास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । परन्तु इस प्रयास में वह जहाँ सीएनजी से हाइड्रोजन में परिवर्तन करने का संयंत्र लगाएंगे उस स्थान पर प्रदूषण की मात्रा बढ़ जाएगी । अतएव यह एक ऐसा प्रयास है कि प्रदूषण का स्थान परिवर्तन किया गया है एवं यह प्रयास Direct CNG के उपयोग के स्थान पर अधिक कीमती एवं ऊर्जा क्षय को बढ़ावा देने वाला है। अतएव इसे एक सार्थक प्रयास नहीं कह सकते जब तक कि उत्पन्न CO_2 के भण्डारण अथवा किसी अन्य यौगिक में परिवर्तन कर इसे वातावरण में जाने से रोका जा सके ।

विशुद्ध तौर पर ग्रीन हाइड्रोजन निम्न प्रकार से बनाया जा सकता है -

(1) पानी के विद्युत अपघटन द्वारा, जिसमें विद्युत सौर ऊर्जा अथवा वायु ऊर्जा (wind) से प्राप्त हो ।
(2) ऐसे सूक्ष्म जीव जो प्राकृतिक रूप से ही पानी का विघटन करें एवं हाइड्रोजन बनाएं ।

उपरोक्त दोनों माध्यम का अधिक प्रचार एवं प्रसार मौलिक शोध किया जाना आवश्यक है जिससे सस्ती हाइड्रोजन उत्पन्न की जा सके ।

दशक की सबसे वांछनीय इच्छा लागत प्रतिस्पर्धी हरित हाइड्रोजन है। भारत ने 2030 तक हरित हाइड्रोजन के लिए असंभव तो नहीं परन्तु एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य निर्धारित किया है। यूके, यूएस और यूरोपीय देशों के पास अपनी आर एंड डी आधारित हाइड्रोजन तकनीक पहले से मौजूद है और वे औद्योगिक उत्पादन पर परीक्षण करने के इच्छुक हैं और निश्चित रूप से भारत के पास उपजाऊ जमीन है। इसलिए वे भारत में निवेश कर प्रौद्योगिकी को परिष्कृत करने हेतु इच्छुक हैं । कंपनियां सुरक्षित परिवहन और उपयोग के लिए हाइड्रोजन के निर्माण, भंडारण और विकास के अवसर तलाश रही हैं। लागत, निश्चित रूप से पारंपरिक ऊर्जा से बहुत अधिक है किन्तु यह जलवायु एवं नेट जीरो और वैश्विक पर्यावरण की रक्षा के लिए है। उनके लिए यह अवसर न केवल पर्यावरण की सुरक्षा के लिए है बल्कि ज्यादातर व्यापार संचालित है।

हरित हाइड्रोजन द्वारा दुनिया को ऊर्जावान बनाने का उत्साह जारी रहना चाहिए किन्तु भारत जैसे देश को अपने नागरिकों में साइकिल और पैदल चलने की संस्कृति को बढ़ावा देने के बारे में सोचना चाहिए। सही कदम यह है कि शहर की सड़कों के साथ-साथ विशेष रूप से साइकिल चालकों और पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित और अनुरक्षित रास्ते/चलने के रास्ते उपलब्ध कराए जाएं। शानदार सार्वजनिक परिवहन प्रदान करने से शहर की सड़कों पर ईंधन की खपत करने वाली SUVs में कमी आएगी। गर्म और शुष्क मौसम के लिए एयर कंडीशनर के बजाय प्रकृति के अनुकूल कूलर को बढ़ावा देना निश्चित रूप से पर्यावरण को सुकून देगा। कम खर्च करने से भी बचत हो सकती है। हरित हाइड्रोजन ऊर्जा का स्वागत है लेकिन ऊर्जा की बचत करके जीवमंडल की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है ।

पंचतंत्र

श्री डी.वी.सिंह,
उप विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून

जीवन तो है एक कड़वा सत्य, स्वीकार कर जहन में उतार लो ।
सफलता की सीढ़ी गर है चढ़नी, पंचतंत्र अभी से तुम अपना लो ।।

अतीत के पन्ने जो पलट चुके, उन पन्नों को फिर क्यों दोहराना ।
नई रोशनी ले रोज उगता सूरज, भविष्य में कदम हमेशा आगे बढ़ाना ।।
आज हैं साथ, वो कल नहीं रहेंगे, दूसरों से ज्यादा क्यों उम्मीद रखना ।
रिश्तों के धागे, बड़े होते हैं नाजुक, मुश्किल है बड़ा, सबको खुश रखना ।।

किसी से अपने को कम आंकना, ख्याल जहन में कभी लाना नहीं चाहिए ।
तकदीर बदलते तनिक देर नहीं लगती, अच्छी सोच लिए, आगे बढ़ना चाहिए ।।

कश्मकश में गुजार अपनी जिन्दगी, चार दिन भी पूरे कर नहीं पाएंगे ।
चिन्ता से शुरू होता चिता पर खत्म, जीवन का सुख कभी भोग नहीं पाएंगे ।

राजभाषा हिंदी

अनिल कुमार शर्मा
कार्यालय अधीक्षक, आगरा

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता है । अपनी बात कहने के लिए और दूसरों की बात समझने के लिए भाषा ही माध्यम होती है । जब मनुष्य इस पृथ्वी पर आकर अपना होश संभालता है तब उसके माता पिता उसे अपनी भाषा में बोलना सिखाते हैं तथा इस तरह से भाषा सिखाने का काम लगातार चलता रहता है । मनुष्य के साथ-साथ ही भाषा के संबंध में राष्ट्र पर भी यह बात लागू होती है । कोई राष्ट्र तभी मजबूत हो सकता है जब उसकी स्वयं की भाषा हो ।

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र को स्थायित्व प्रदान करने के लिए राष्ट्रभाषा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए जो कि किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है । किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य की उपलब्धता, सरलता और वैज्ञानिकता तथा भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण अनिवार्य हैं । यह सभी गुण हिंदी भाषा में है ।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम सन् 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया था तथा स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को ही हिंदी भाषा को भारत संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी थी । उसके उपरान्त सरकार ने हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए अधिनियम, नियम बनाए, प्रोत्साहन पुरस्कार योजना आदि प्रारम्भ किए ताकि हिंदी को उसका उचित स्थान मिल सके । उसी का परिणामहै कि आज हिंदी भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर भी अपनी छाप छोड़ रही है । इंटरनेट की दुनिया हो या कोई अन्य, सभी जबह हिंदी छाई हुई है । हिंदी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रीयता, एक राष्ट्र-एक भाषा की आवश्यकता और राष्ट्रीय एकता को परिभाषित करती है । यह सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति भी सचेत है । अत: हम यह संकल्प लें कि हम सभी हिंन्दी के उन्नयन में समर्थ और सार्थक योगदान देते हुए इसे विश्व की भाषा बनाएंगे ।

पदचिह्न

विनोद कुमार मिश्रा,
संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा

मील के पत्थर की कहानी,
लिखकर सो गई वो सयानी ।

पगडंडियों पर सभी चलते हैं,
न जाने कब से चलते आए हैं लोग ।
रास्ता साफ और नदारद घास,
फक्र है उन्हें पूर्वजों के पदचिह्नों पर
संस्कृति और अपनी विरासत पर ।

गोया कुछ लोग अनबूझ रास्ते तलाशते हैं ।
मील दर मील चलते हैं पथरीली पथ पर ।
पांव के छालों के शूल,
और गरम रक्त की कुछ बूंदें ।

बेजुबान पत्थर हंसते हैं,
इंतजार करते हैं ऐसे राही का ।
मनगढ़ंत कहानियाँ बनाते हैं,
राही भटक कर आया होगा ।

माशूका की बेवफाई से,
बिलग राह बनाया होगा ।
तंग होकर अपनों की बेवफाई से,
वफा ढूंढता होगा अपनी तन्हाई से ।

सयाना कुछ जुदा सा था,
इस मुसाफिर को चांद की रौनक न चाहिए ।
इसे तो जुगनुओं की रोशनी का इंतजार है ।
सूरज की रोशनी में तो सब चलते हैं,
इसे अंधेरों से बड़ा प्यार है ।

सयानी अब मुस्कराई सपनों में,
नए मील के पत्थर लगाओ ।
एक नई पगडण्डी बनने को है,
फिर एक विरासत बनने को है ।

इंसानी रिश्ते इमारत की ही तरह होते हैं ।
उनमें हल्की फुल्की दरारें पड़ जाएं तो इमारत को तोड़िए नहीं,
उसकी मरम्मत कीजिए ।

मेन्टेनेन्स या रिपेयर - अपने एवं अपनों के स्वास्थ्य के लिए क्या चुनते हैं आप

श्रीमती श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

आप और हम बेहद खुशनसीब हैं कि ईश्वर ने हमें मानव जीवन का उपहार दिया है । हमारा यह कर्तव्य है कि अन्य उपहारों की तरह हम इस अनमोल उपहार को भी सहेज कर रखें । चूंकि इस उपहार के लिए आप और हम ने कोई मूल्य नहीं चुकाया है अत: इसका मूल्य हमें स्वयं ही तय करना होगा । जब तक आप ईश्वर प्रदत्त अपने इस जीवन का मूल्य तय नहीं करेंगे तब तक जाहिर सी बात है, आप इसकी वह उचित देखभाल नहीं करेंगे जिसका, आपका यह जीवन हकदार है, आप उसे उतना सहेज कर नहीं रखेंगे जितना सहेज कर आपको इसे रखना चाहिए । इसके पीछे एक सामान्य सा मनोविज्ञान काम करता है - **मुफ्त में या उपहार में पाई वस्तुओं की हम वो कदर नहीं करते जितनी हम खरीदी हुई (जिसका हमने कमोबेश कुछ मूल्य चुकाया है) वस्तुओं की करते हैं ।** आप स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर ही इसका आकलन करके देखिएगा, शतप्रतिशत सही पाएंगे इसे ।

भौतिक सुखों की तमाम चीजें आपने बचपन से ही अपने घर में देखी होंगी और बहुत कुछ आपने स्वयं खरीद कर भी जुटाया होगा ।

1- दोपहिया या चार पहिया वाहन जब तक सड़क पर दौड़ रही है तब तक तो सही है परन्तु जब उसे कहीं रोकना पड़ता है तो आप तुरन्त उसे बन्द कर देते हैं या कहीं लम्बे समय तक वाहन चलाना पड़े तो भी उसे थोड़ा विश्राम देते हैं ताकि इंजिन अधिक गरम होकर कहीं यह चलना बन्द न हो जाए ।
क्या कभी अपने शरीर के इंजिन को भी इस तरह से नियमित विश्राम देने के बारे में सोचा है आपने कि कहीं ये चलना बन्द हो जाए तो क्या होगा ? शायद नहीं, क्योंकि भले ही आपका जीवन बेशकीमती है पर आपको मिला तो मुफ्त में ही है ।

2- भौतिक सुखों के लिए ए.सी, फ्रीज, कूलर, टीवी, वाशिंग मशीन, माइक्रोवेव ओवन आदि हर खास औ' आम वस्तु होगी आपके घर में और साथ में होंगे इनके मैनुअल ताकि इन कीमती वस्तुओं के सही प्रकार से प्रयोग की जानकारी आपको मिल सके और आप जान सकें कि इन्हें किस तरह से चलाया जाए ताकि ये लम्बे समय तक आपको अच्छी सेवाएं दे सकें ।
मैनुअल के अनुसार इसके प्रयोग की विधि प्रथमतया तो इन्स्टालेशन के लिए आने वाले भैया ही समझा जाते हैं और फिर आवश्यकता अनुसार आप भी मैनुअल को पढ़कर प्रयोग विधि को जान लेते हैं ।
क्या कभी अपना "बॉडी मैनुअल" प्राप्त करने की भी कोशिश की है आपने ताकि आप यह जान सकें कि आपको अपने शरीर को किस तरह चलाना है ताकि यह लम्बे समय तक स्वस्थ रहकर काम कर सके ? शायद नहीं, क्योंकि भले ही आपके जीवन का मोल इन तमाम भौतिक वस्तुओं से कहीं अधिक हो पर आपको तो मुफ्त में ही मिला है ।

3- एयर कन्डीशनर, वाटर प्यूरिफायर, कम्प्यूटर, प्रिन्टर आदि तमाम भौतिक वस्तुओं के उचित रखरखाव के लिए आपने शायद ए.एम.सी की भी सुविधा ले रखी है ताकि समय रहते उनका मैन्टेनेन्स होता रहे एवं आपको निर्बाध रूप से उनकी सेवाएं मिलती रहें क्योंकि इन में से एक की भी सेवा ठप हो जाना आपके लिए असहनीय होगा । रिपेयर करवाने की नौबत आई तो रिपेयर करवाने में लगने वाला वक्त आपकी दिनचर्या को डिस्टर्ब कर देगा ।
लेकिन क्या कभी आपने अपने शरीर के "एनुअल मेन्टेनेन्स" के बारे में सोचा है ? शायद नहीं । उसके लिए आप संभवत: केवल रिपेयर की मानसिकता लेकर चलते हैं । जब तक चल रहा है ऐसे ही चलाए जाओ, कुछ होगा तो "रिपेयर" (इलाज) करवा लिया जाएगा ।

यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं विचारणीय प्रश्न -

भौतिक सुख-सुविधा की प्रत्येक वस्तु रिपेयर होकर पुन: कार्यरत दशा में आ सकती है । यदि ऐसा नहीं भी हो पाता तो कोई फर्क नहीं पड़ता, फिर से वही वस्तु बाजार से पुन: नई खरीदी जा सकती है, परन्तु क्या आपके हमारे शरीर / जीवन को भी रिपेयर न होने की दशा में इस तरह दूसरा / नया प्राप्त किया जा सकता है ?

संभवत: आप भी हमारे जवाब से सहमत होंगे - **"नहीं, बिल्कुल नहीं । शरीर एक बार नष्ट हो गया तो हमेशा के लिए गया, जीवन एक बार शेष हुआ तो फिर कभी वापस नहीं मिलता"**

शायद आप पाठकगणों में से बहुत से लोग अपने, अपने परिवार के स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग, सचेत, जागरूक होंगे और वह स्वयं एवं परिवार को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिए प्रति वर्ष 'फुल बॉडी चैक अप' करवाते होंगे ताकि अपने शरीर के बारे में जानकारी ले सकें एवं तदनुरूप आवश्यक उपाय भी कर सकें । निश्चित रूप से यह उनका सराहनीय कदम है एवं इस जागरूकता के लिए वह बधाई के पात्र भी हैं । परन्तु हां यह जानकारी होना आवश्यक है कि क्या फुल बॉडी चेक अप के बाद भी हमारे स्वास्थ्य से सम्बन्धी कुछ जानकारियां छूट तो नहीं जा रही हैं । यदि ऐसा है तो हमें निश्चित रूप से इस पर गौर करना होगा । क्योंकि जब स्वास्थ्य ही बात हो रही हो तो आपका मानसिक स्वास्थ्य भी उसका एक हिस्सा है । आपके लिए उचित खानपान (यहां हैल्दी या अनहैल्दी फूड मायने नहीं रखता), आपके लिए निर्धारित व्यायाम, आपकी जीवन शैली, आपके लिए निर्धारित योग क्रियाएं सभी मिलकर आपके अच्छे स्वास्थ्य को तय करेंगी । क्या आपको फुल बॉडी चैक अप के माध्यम से अपने / अपनों के लिए यह सब जानकारियां मिल रही हैं । यदि नहीं, तो निश्चित रूप से कहीं न कहीं कोई कमी रह जा रही है जिस पर गौर करने की आवश्यकता है ।

यदि सिर्फ पौष्टिक आहार, अच्छी नींद, नियमित व्यायाम, पॉजिटिव एटीट्यूड ही अच्छे स्वास्थ्य के मापदण्ड हैं तो फिर सौरव गांगुली को 48 वर्ष की उम्र में हार्ट अटैक, सतनाम खत्रा का 31 वर्ष की आयु में, मिष्टी मुखर्जी का 27 वर्ष की आयु में, इसी तरह रुद्रतेज सिंह, राजू श्रीवास्तव, सिद्धार्थ शुक्ला, सिद्धान्त सूर्यवंशी, गायक के० के० के अल्पायु में असमय ही दुनिया को अलविदा कहने के पीछे क्या कारण रहे इस पर भी गौर फरमाने की आवश्यकता है । यह सिर्फ कुछेक चुनिंदा सेलिब्रिटीज़ के नाम हैं जिनके बारे में समाचारों में चर्चा होने के कारण हम और आप जान पाए हैं ।

ऐसे ही न केवल तमाम और सेलिब्रिटीज़ हैं बल्कि हमारे और आपके इर्द-गिर्द कितने ही परिवारीजन या परिचित होते हैं जो अनायास चले जाते हैं या जिन्हें अचानक ऐसा कुछ डायगनोज़ होता है जो हमें आपको सोचने पर मजबूर करता है कि यह तो स्वास्थ्य को लेकर बहुत जागरूक थे, रोज सुबह टहलने भी जाते थे, नियमित व्यायाम भी करते थे या फिर जिम में भी जाते थे, धूम्रपान या अल्कोहल से कोसों दूर थे, शाकाहारी भी थे, जंक फूड को हाथ भी नहीं लगाते थे, फिर इनके साथ ऐसा अघटन कैसे हो गया ?

यदि हम सभी ने कभी न कभी ऐसा कुछ देखने / सुनने का अनुभव किया है तो निश्चित रूप से इसके पीछे के कारणों को जानने की आवश्यकता है । चिकित्सा विज्ञान इतना विकसित हो चुका है कि हम चाहें तो समय रहते अपने डीएनए को डी-कोड करके अपना बॉडी मैनुअल प्राप्त करके, बीमार होकर मजबूरी में इलाज के तरफ जाने से बच सकते है एवं बचाव के राह पकड़ सकते हैं । आवश्यकता है बस अपने और अपनों के लिए यह निर्णय लेने की ।

लक्ष्य सही होना चाहिए, क्योंकि काम तो दीमक भी दिन रात करते हैं, परन्तु वह निर्माण नहीं, विनाश करते हैं ।

परिवार

श्री अनूप कुमार शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

रवि आज अपनी ही धुन में शान्त सड़क पर गाड़ी दौड़ाता जा रहा था और अपने आसपास से बेखबर और सोचता जा रहा था कि कभी-कभी जरा भी लापरवाही हमें कहाँ खड़ा कर देती है । पिछले कुछ दिनों से उसकी भागदौड़, व्यस्तता कुछ ज्यादा ही हो गई थी क्योंकि अचानक उसे नए शहर व नया माहौल में शिफ्ट होना पड़ा था । उसके मन में विचारों का ..... चलने लगा और वह अपने अतीत को देखने लगा । क्या नहीं था उसके पास, सभी कुछ तो ठीक चल रहा था । पत्नी शालिनी और दोनों खुशहाल जीवन जी रहा था । एक रुटीन जीवन, उसी दौरान उसने अनुभव किया कि पत्नी के व्यवहार में परिवर्तन एवं उसके ज्यादा घूमने फिरने में कुछ बदलाव जिसे लेकर वह उद्विग्न सा रहने लगा, स्वतन्त्र जीवन शैली जीने की ललक उच्च आकांक्षाएं एवं कुछ छिपाने की प्रवृत्ति से रवि परेशान सा रहने लगा । शालिनी रोक-टोक की शैली में दूर व स्वतन्त्र जीवन जीने की उत्कंठा की ओर अग्रसर होने लगी । रवि जो कि खुद एक रिजर्व प्रवृत्ति का था और ज्यादा घूमने फिरने में कतराता था, को आभास होने लगा कि कहीं न कहीं कुछ गलत अवश्य है ।

चूंकि आदमी का वतर्मान का कोई एक अलग कदम ही भविष्य की रूप रेखा तक कर देता है । इसी का परिणाम हुआ कि रोज-रोज की चिक चिक, एक दूसरे पर अविश्वास एवं अलग होने की धमकी, जो कि रवि को बिल्कुल असहज कर देती थी । चूंकि रवि ने शालिनी से लव मैरिज की थी और उसका भविष्य सिक्योर करने के लिए मकान व अन्य असेट्स उसी के नाम पर थे । रवि यह बहुत अच्छी तरह से जानता था कि लीगल सेपरेशन की स्थिति में उसके पास कुछ नहीं बचेगा ।

अचानक उसे एक विचार सूझा और एक रिस्क लेने का निर्णय कर लिया । उसने एक दिन सही समय पर शालिनी के सामने प्रोपेज़ल रखा कि मैं तुमको एक इलेक्ट्रिक इक्विपमेन्ट शोरूम गिफ्ट करना चाहता हूँ । तुम उसे ऑपरेट कर सकती हो क्या ? शालिनी इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी लेकिन जैसे ही सुना, स्वभाव के मुताबिक उसने हाँ कह दिया । लेकिन कुछ पैसे मुझे तुम्हारे assets से अरेंज करने पड़ेंगे । रवि अच्छी तरह जानता था कि अकेले शोरूम चलाते चलाते उसे अनर्गल activities के लिए समय ही नहीं मिलेगा और उसकी जो goodwill बनेगी वह उसे खराब करना नहीं चाहेगी । रवि का व्यवसाय तो चल ही रहा है, उसे कुछ assets ही तो गंवाने पड़ेंगे लेकिन घर परिवार तो टूटने से बच जाएगा ।

युवा कौन है ?

कु० प्राची
पुत्री श्री देवनाथ, उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा

युवा शब्द से क्या तात्पर्य है ?

सबकी अपनी परिभाषा है, परन्तु अगर हम इस शब्द से खेलें और अपने नज़रिए को बदलें तो इस शब्द को उल्टा करने पर 'वायु' शब्द का निर्माण होता है, अर्थात् वायु की गति से कार्य करने वाला प्राणी - उम्र, धर्म, जाति, लिंग के निरपेक्ष युवा है । ऊर्जापूर्ण, परन्तु व्याकुल, लक्ष्य की ओर भागता हुआ । भीड़ में सब उसके साथ हैं परन्तु वह अकेला है, नक्शे की तलाश में है परन्तु वह अनभिज्ञ है कि जीवन में लक्ष्य नक्शे से नहीं अपितु पछतावे और अनुभव से प्राप्त होता है ।

आपने 'मोना लीसा' की प्रसिद्ध रचना के बारे में सुना है ? जिस प्रकार वह एक रहस्य की तरह है परन्तु मन को मोह लेने वाली है । उसी प्रकार युवा एक रहस्य है, उचित अनुचित का भेद करने वाला व्यक्ति श्रेष्ठ है; वह राष्ट्र निर्माण का सहभागी है ।

हिंदी

प्रमोद कुमार शर्मा
उच्च श्रेणी लिपिक, आगरा

भाषा, भावों को स्पष्ट करने एवं विचारों का माध्यम होती है। एक तरह से, किसी भी व्यक्ति अथवा राष्ट्र के विचारों की समर्थता उसकी भाषा से स्पष्ट होती है। जब से व्यक्ति ने होश संभाला है, तभी से भाषा की आवश्यकता रही है । भाषा ही व्यक्ति को व्यक्ति से, समाज को समाज से एवं राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती है। प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की एक भाषा होती है तथा भाषा के द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। राष्ट्र को सक्षम और समर्थ बनाने के लिए भाषा की सक्षमता और उसका विकास परम आवश्यक है।

भाषा का भावना से गहरा संबंध है। यदि हमारे भावों तथा विचारों को पोषक ..... किसी विदेशी भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारी व्यक्तिगतता भी अभारतीय अथवा विदेशी हो सकती है। अत: व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास एवं उसकी शक्तियों का विकास उसकी मातृभाषा में जितनी सहज गति से सम्भव है उतनी किसी भी विदेशी भाषा में संभव नहीं है।

मुंशी प्रेमचंद ने कहा है - भाषा ही राष्ट्र, साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है, आदर्शों की सृष्टि करती है। नि:सन्देह भारत के सन्दर्भ में यह भाषा हिंदी ही हो सकती है। इसकी लिपि बहुत ही समृद्ध एवं सरल है। भारत में यह जनसामान्य की भाषा है। देश के ज्यादातर हिस्सों में लोक व्यवहार व बातचीत में हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। हिंदी ने बड़ी आसानी से प्रचलित एवं अन्य भाषाओं के आम शब्दों को अपने में समाहित कर लिया है। भाषा के लचीलेपन के कारण ही हिंदी अधिक सक्षम, सहज और समर्थ हुई है।

राजर्षि टण्डन के शब्दों में - हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है, हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है ।

इसी भावना को ध्यान में रखकर 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा एकमत से हंदी को सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में लागू करने का निर्णय लिया गया तथा भारत के संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अन्तर्गत संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होगी और लिपि देवनागरी होगी तथा हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए 15 वर्ष यानि 1965 तक की समय सीमा तय की गई लेकिन साथ में यह भी जोड़ दिया गया कि 1965 के बाद भी जब सभी राज्यों की विधान सभाएं स्वत: से निर्णय नहीं लेती हैं कि हिंदी राष्ट्रभाषा हो - सरकारी कामकाज में अंग्रेजी सहभाषा के रूप में लागू रहेगी । उसका परिणाम यह हुआ कि अभी तक अंग्रेजी मुख्य और हिंदी उसकी सहभाषा के रूप में है तथा हम हमारे ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बन बैठे हैं और अपनी भाषा को ही मान सम्मान नहीं दे पा रहे हैं ।

अब वक्त आ गया है कि हम शोषण व गुलामी के प्रतीक अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा, शासन, प्रशासन एवं न्याय की भाषा का हिस्सा बनाएं । इसके लिए हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के विकास एवं संरक्षण के बारे में पूरी गंभीरता से सोचें । इस दिशा में भारत सरकार पहल कर रही है तथा नई शिक्षा नीति भी इसी दिशा में एक सार्थक कदम है । अब मेडीकल एवं इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिंदी माध्यम / अन्य भारतीय भाषाओं में कराने पर विचार हो रहा है । मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में तो इसकी शुरुआत भी हो चुकी है । प्रत्येक भारतीय को स्वेच्छा से, कार्यभार में हिंदी को अपनाने का संकल्प लेना होगा तथा इसे भारत की राष्ट्रभाषा बनवाने के लिए निरन्तर प्रयास करना होगा ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में - निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।

एक बार फिर ..... !!

(वर्ष 2022 के बीतने एवं वर्ष 2023 के आगमन के परिप्रेक्ष्य में)

श्रावणी गांगुली
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा

2022 का पहिया भी खिसकते खिसकते लगभग अपने आखिरी छोर पर आ पहुँचा है । कल से वह भी अपनी विदाई की तैयारी में जुट जाएगा । जो आया है, उसे जाना होगा ... जो शुरु हुआ है, उसे खत्म होना होगा .... जो बना है, उसे मिटना होगा, यह शाश्वत् सत्य जीवों तथा निर्जिवों पर समान रूप से लागू होता है ।

एक बार फिर नया साल आएगा और शुरू होगा शुभकामनाओं का दौर, लगेंगे बधाईयों के तांते, डिजीटल इस युग में फिर से सोशल मीडिया भर जाएगा 'हैप्पी न्यू ईयर', 'नया साल मुबारक हो' और 'नूतन वर्ष 2023 शुभ हो' आदि रंगबिरंगे चित्रों और संदेशों से । उम्मीदों और शुभकामनाओं से भरा होगा नव वर्ष का प्रथम दिन और लगभग प्रथम पूरा माह ही, और फिर धीरे धीरे कुंद पड़ जाएंगे यह संदेशों के सिलसिले । प्रश्न यह उठता है कि अगर अच्छे के लिए उम्मीद करते हुए शुभकामनाएं देनी हैं तो जनवरी में ऐसी कौन सी लॉटरी लगनी है कि देश दुनिया एक दूसरे को बढ़चढ़कर बधाई एवं शुभकामनाएं दे रही है और फिर पलट कर पूछ भी नहीं रही है कौन कैसा रहा । अगर अपने या अपनों के लिए वाकई फिक्रमंद हैं तो हर नए माह, हर नए सप्ताह, हर नए दिन एक अच्छी उम्मीद के साथ बधाईयों एवं शुभकामनाओं का अनवरत सिलसिला क्यों नहीं । हालांकि पहली जनवरी को शुभकामनाएं देने की इस 'भेड़चाल परम्परा' में हम स्वयं भी शामिल हैं लेकिन फिर भी मन में प्रश्न उठा, जायज सा भी लगा सोचा अभिव्यक्त कर देना ही ठीक रहेगा ।

ऐसे ही कुछ विशेष अवसरों पर शुभकामनाओं के आदान प्रदान के इतर जब भी कभी हम किसी से बातचीत करते हैं तब 'शुभकामना' शब्द दूर दूर तक हमारे वार्तालाप का हिस्सा नहीं होता, तब उसे जो शब्द रिप्लेस कर देता है वह है - 'उम्मीद' । ''उम्मीद है सब ठीक ठाक चल रहा है, / Hope, all well'' । इसे दो तरह से समझा जा सकता है - एक तो यह कि हमने पहली जनवरी को या कुछ विशेष अवसरों पर जो शुभकामनाएं दी थीं उनके भरोसे आगामी एक वर्ष तक हम ''उम्मीद'' कर सकते हैं कि आपके साथ सब कुछ ठीक-ठाक ही होता रहेगा और दूसरा यह कि हम ईश्वर पर पूर्ण आस्था रखते हैं और उस आस्था, उन पर भरोसे के बल पर यह ''उम्मीद'' कर रहे हैं कि उन्होंने सब ठीक-ठाक रखा होगा ।

हम व्यक्तिगत रूप से दूसरे वाले, यानि ईश्वर पर आस्था वाली ''उम्मीद'' पर शतप्रतिशत से भी अधिक भरोसा करते हैं परन्तु उसके अलावा ''उम्मीद'' शब्द से डरते हैं क्योंकि दूसरी वाली है 'इंसानी उम्मीद' । वह उम्मीद सिर्फ और सिर्फ स्वयं से करके आप निश्चिन्त रह सकते हैं, उसके अलावा किसी से भी नहीं । एक ईश्वर और एक हम स्वयं, तीसरा और कोई नहीं । इसके पीछे एक छोटा सा तर्क जो हमें समझ में आता है कि जो सिर्फ 'देने वाला है, दाता है' वही सबकी उम्मीदों पर खरा उतर सकता है क्योंकि उसे किसी से कोई अपेक्षा नहीं रहती, जहाँ हम या कोई भी 'पाने वाला हुआ' तुरन्त उसके समक्ष प्राथमिकताएं आ खड़ी होती हैं जो उसे स्वयं निर्धारित करनी होती हैं - स्वयं के लिए या किसी और के लिए, पहले क्या किया जाए । मानव मन का झुकाव हमेशा 'स्वयं की तरफ' अधिक रहता है, हम भी उससे इतर कुछ नहीं हैं । प्राथमिकता निर्धारण में 'स्वयं', हमेशा 'कोई और' पर भारी पड़ता है । स्वयं के लिए परिणाम पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना और स्वयं के प्रयास (चाहे वह किसी भी रूप में हो) केवल इन्हीं के बल पर आप जितना और जो पा सकें वही सही मायने में हमारा/आपका अपना है क्योंकि जहां हमने/आपने इसमें किसी भी और को शामिल किया या हमें / आपको किसी और को शामिल करने की आवश्यकता हुई वहीं शुरू होती है हमारी/आपकी उससे 'अपेक्षाएं और उम्मीद' । हम/आप जिनसे यह अपेक्षा और उम्मीद करते हैं उनकी भी तो प्राथमिकताएं हैं, उन्हें नज़रअंदाज कर देना बिल्कुल उचित नहीं । इसका यह अर्थ कतई नहीं कि किसी से अपेक्षा या उम्मीद ही न की जाए ।

यह दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है जो स्वयं से अधिक दूसरों के लिए फिक्रमंद हैं, जो प्राथमिकताओं में पाने की अपेक्षा देने को प्रथम स्थान पर रखते हैं बशर्ते उसमें उनका कोई व्यक्तिगत अहित न हो रहा हो । हमें/आपको स्वयं यह आकलन करके देखना होगा कि इसमें से हम स्वयं को किस पायदान पर खड़ा पाते हैं । अनुभव यह कहता है कि दूसरों की फिक्र भी करो तो भी उसे नि:स्वार्थ भाव से करो, बदले में फिक्र पाने की उम्मीद भी, है तो आखिर उम्मीद ही ।

वर्ष 2022 भी लगभग गुज़र गया हर पिछले बीते लम्हें की तरह । यह वर्ष हमारे जीवन में एक विशेष स्थान रखेगा हमेशा, एक अमिट छाप छोड़कर जा रहा है यह वर्ष । कहते हैं न अति किसी चीज़ की अच्छी नहीं होती - उसमें खुशियां और दर्द भी शामिल हैं । अत्यधिक खुशी मिले तो समझ लीजिए आँसू कहीं न कहीं पीछे खड़े इन्तज़ार कर रहे हैं आपका, इसलिए खुशी को भी गर्म चाय की तरह घूंट-घूंट पीकर उसका आनन्द लीजिए । अचानक मिले खजाने की तरह उसे भी अगर जल्दी से दोनों हाथों से बटोर कर तिजोरी में भरने का सा उत्साह दिखाएंगे तो पीछे खड़ा आँसू भी तो जल्दी ही आ पहुँचेगा आप तक । यह वर्ष व्यक्तिगत पारिवारिक तो नहीं लेकिन फिर भी पारिवारिक दृष्टि से चहुँ ओर से खुशियाँ बटोर कर लाया था और अचानक से आया एक लम्हा जीवन भर के लिए एक टीस दे गया है ।

मित्रों के मामले में ईश्वर ने हमारे लिए खजाना खोल रखा है, कहीं कोई कमी नहीं है । ऐसे भी मित्र हैं कि हमारा ही हर हाल हमसे पहले वह जानते हों, हम कुछ बोलें उससे पहले वह समझ लेते हों, हम भी निश्चिन्त थे साईं बाबा का यह वरदान पाकर । लेकिन जैसा कि हमने ऊपर कहीं लिखा है 'प्राथमिकताएं' - उनको कहाँ ले जाएगा कोई । मित्र अपनी प्राथमिकताओं को पूरा करने में व्यस्त हो गए और हमारी वह निश्चिन्तता हमें ही प्रश्न करने लगी ।

व्यावसायिक जीवन में हम 2022 को एक बहुत अच्छा वर्ष कहेंगे । शुरुआती एक दो माह जितने तनावपूर्ण रहे उसके बाद का पूरा वर्ष उतना ही राहत भरा और खुशहाल रहा और यह बहुत स्वाभाविक है कि उसका पूरा प्रभाव कार्योत्पादकता पर भी पड़ा । 31 वर्ष के सेवाकाल में इसी वर्ष पहली बार राष्ट्रीय स्तर के एक कार्यक्रम में कार्यालय का प्रतिनिधित्व करने का अवसर भी प्राप्त हुआ । 'उम्मीद' है ईश्वर की कृपा से शेष सेवाकाल भी बहुत अच्छा बीतेगा ।

आने वाले कल, वर्ष 2023 के प्रत्येक माह एवं प्रत्येक दिन के लिए आपके अच्छे स्वास्थ्य, खुशहाल एवं सुरक्षित जीवन की अनेक अनेक शुभकामनाएं ।

<u>सपनों में रख आस्था</u>

प्रवेश कुमार
निम्न श्रेणी लिपिक, आगरा

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से न डर, आलस परित्याग किए जा ।

गलती कर न घबरा,
गिर कर फिर हो जा खड़ा ।

समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे ।

रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरुरत नहीं किसी मुसीबत से घबराने की ।

जो पाना है बस उसकी, एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर, साथ में खुदा की इबादत भी कर ।

फिर देख किस्मत क्या क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी ।

छोटी छोटी परन्तु महत्वपूर्ण जानकारियाँ

श्री प्रदीप कनौजिया
वाहन चालक, ग्रेड - 1, आगरा

1. बच्चों के सामने कभी भी कोई नकारात्मक बात न करें । यह उन के बाल मन पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा ।
2. अबेकस द्वारा दिन में तीन से चार बार ओरल जोड़ना घटाना करने से याददाश्त बढ़ती है ।
3. गर्मी में बाहर जाने से पहले पर्याप्त मात्रा में पानी पीकर निकलें ।
4. मूल और मछली खाने के बाद कभी भी दूध और दही का सेवन नहीं करना चाहिए ।
5. बच्चों को रोज आउटडोर गेम खेलने के लिए प्रतिदिन एक घंटा घर से बाहर जाने दें।
6. बच्चों के सामने घर के बड़े और छोटे एक दूसरे से तहजीब से बाते करें जिससे बच्चे भी उसी प्रकार का आचरण सीख पाएं ।
7. घर का कोई भी सदस्य, खास कर बच्चे, यदि गुमसुम - उदास रहते हैं तो उन्हें नज़रअंदाज़ न करें, उनसे प्यार से बात करें और उनकी उदासी का कारण जान कर उससे बाहर निकलने में उनकी मदद करें ।
8. बच्चों से जो भी अच्छी आदतें आप अपेक्षा करते हैं, उनके सामने उन्हीं आदतों के उदाहरण पेश कीजिए ।
9. नाभी में सरसों का तेल लगाने से होंठ नहीं फटते हैं ।
10. बचपन से ही बच्चों में मोबाइल की आदत न डालें ।

वर्तमान समय में भारतीय बाजारों में हिंदी का वर्चस्व

संकलित - श्री मनोज कुमार
सहायक, अगरा

भाषा की निर्मिति हमेशा ही बाज़ार में हुई है। बाज़ार में कुछ ख़ास ज़रूरतों के तहत मनुष्य एक दूसरे से जुड़ते हैं। उनके संबंध विकसित होते हैं। भाषा के रूप बनते हैं। बाज़ार में भाषा चीज़ों को परिभाषित करती है, चीज़ें भाषा को परिभाषित करती हैं। गाँव की हाट से जिले की मंडी तक, जिला मंडी से प्रांतीय बाज़ार तक और वहाँ से राष्ट्रीय बाज़ार और अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क तक बाज़ार के विकास के साथ-साथ मनुष्य संबंधों की अनेक स्तरीय यात्राएँ भी हैं। ये यात्राएँ बोलियों के परम्परागत रूप से प्रांतीय भाषाओं तक की यात्राएँ हैं। बाज़ार बदलते रहते हैं और भाषा भी। मनुष्य व्यवहारों के साथ भाषा हर क्षण बदलती रहती है। उसकी यह गतिशीलता ही उसकी जीवन्तता है।

पिछले एक दशक में पूँजी के असीम विस्तार और संचार साधनों के अभूतपूर्व विकास ने विश्व बाज़ार और आर्थिक भूमंडलीकरण की जो भूमिका रची है, उसमें मुनाफा आधारित उत्पादन प्रणाली को दुनिया के नये बाज़ारों की ज़रूरत है। बंद दरवाजे खुल रहे हैं। सीमाएँ टूट रही हैं, प्रतिबंध समाप्त हो रहे हैं। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद बीसवीं सदी के अंतिम दशक में बदली हुई राजनीतिक स्थितियों और संचार उपकरणों में आयी क्रांति ने देशों के बीच भौगोलिक दूरियों और राष्ट्रीय सीमाओं को अप्रासंगिक बना दिया है। नयी बाज़ार संस्कृति इस आर्थिक भूमंडलीकरण का एक अनिवार्य हिस्सा है। विश्व बाज़ार अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन-सहन, भाषा-भूषा, दैनिक जीवन, आचरण और मूल्य-बोध का अपने तरीके से अनुकूलन कर रहा है।

आर्थिक भूमंडलीकरण की सांस्कृतिक प्रक्रिया का सबसे प्रमुख लक्षण यह दिखाई देता है कि उपभोग सामग्री के रूप में विश्व संस्कृति के प्रतीक सारे संसार पर हावी हो रहे हैं। इन प्रतीकों को बनाने और प्रचारित-प्रसारित करने में मीडिया की अभूतपूर्व ताकत का विलक्षण तरीके से उपयोग हो रहा है। स्थानीय और राष्ट्रीय संस्कृतियों का जनता के एक बड़े समूह के लिए बड़ा भावनात्मक अर्थ होता है, जबकि ग्लोबल-संस्कृति में ऐसी किसी जातीय स्मृति की अपील नहीं है। स्थानीय संस्कृति अपने भूगोल और समय से बंधी होती है, जबकि ग्लोबल-कल्चर पर ऐसे कोई दबाव नहीं हैं। यह एक विशृंखलित, समयहीन, विजड़ित संस्कृति है जो किसी भी भौगोलिक संदर्भ के बाहर खड़ी है। माकेल जैकसन या मैडोना का कोई संदर्भ संसार नहीं है : कोका कोला या मैकडॉनॉल्ड को बेचने वाले चरित्रों की देश-काल पर आधारित छवि नहीं है। ये सारी चीजें वास्तविक संसार के भीतर एक स्वैरकल्पना का संसार रचते हुए उसमें वास्तविकता के अर्थों को आरोपित करती हैं।

विज्ञान और छवियों का खेल इस नयी बाज़ार संस्कृति का मूल अस्त्र है। यह बाज़ार लोगों के भीतर स्वप्न और इच्छाएँ जगाता है। उनके भीतर सामानों से जुड़ी हुई नयी जरूरतें पैदा करता है। यह सारे संसार में एक समान व्यावसायिक जीवन शैली, रहन-सहन, खान-पान, सौंदर्य चेतना और मूल्य बोध की एकरूपता पैदा कर रहा है। मुनाफा कमाने की इस रणनीति में सांस्कृतिक रूपों की एक नयी गतिशीलता तैयार हो रही है। व्यवसाय और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू बन गये हैं। वास्तुशिल्प, विज्ञापन, फैशन, संगीत, फिल्म, खेल जगत, घटनाएँ, भव्य आयोजन, पूँजी प्रचार अभियान के क्षेत्र में इस नये छवि-संसार को देखा जा सकता है।

बाजार विस्तार की यह रणनीति स्थानीय विविधताओं या बहुलताओं में विश्वास नहीं करती पर अपनी प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए स्थानिक तत्वों को अपने भीतर आत्मसात करती जा रही है। एक तरफ उन्नत संचार प्रणालियों और बहुराष्ट्रीय निगमों के छवि निर्माण विभागों द्वारा सांस्कृतिक वर्चस्व का अभियान चलाया जा रहा है और दूसरी ओर इस विश्व बाज़ार का स्थानिक सांस्कृतिक तत्वों की गतिशीलता के बिना काम भी नहीं चलता। स्थानीय भाषाएँ इन अर्थों में विश्व बाज़ार के लिए महत्वपूर्ण साधन बन गयी हैं। ये भाषाएँ भूमंडलीय उपभोक्ता संस्कृति को स्थानीय परिवेश में आरोपित करने की भूमिका निभाती हैं। इस तरह स्थानीय संस्कृति भूमंडलीय संस्कृति के रूपाकारों को अपना रही है, वहीं भूमंडलीय संस्कृति भी अलग-अलग भौगोलिक परिवेशों में वहाँ के तत्वों के मिश्रण से अपना चोला बदल रही है। जियो-पॉलिटिकल और जियो-कल्चरल नक्शे भविष्य में अर्थहीन होते जाएँगे।

विश्व बाज़ार की इस सांस्कृतिक पीठिका को सामने रखकर हमारे अपने देश के संदर्भ में हिन्दी भाषा से उसके बनते हुए संबंधों को देख जाना चाहिए। विश्व बाज़ार के सांस्कृतिक पहलुओं को भारतीय समाज की अंदरूनी तहों में प्रवेश कराने में हिन्दी की एक बहुत विशिष्ट भूमिका बन गयी है। हमारे यहाँ लगभग १०० करोड़ की आबादी में १८ करोड़ लोगों की मातृभाषा हिन्दी है, ३० करोड़ लोग इस भाषा का उपयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि लगभग २२ करोड़ लोग किसी न किसी रूप में हिन्दी भाषा के सम्पर्क में आते ही हैं। अर्थात् १०० करोड़ की आबादी में यदि ७० से ७५ करोड़ लोग एक ही भाषा के व्यवहार से जुड़ते हैं तो वह भाषा स्वाभावत: बाज़ार शक्तियों के इस्तेमाल के लिए एक प्रभावशाली उपकरण बन जाती है। संख्या के हिसाब से यह विश्व में तीसरे स्थान पर मानी जाती है।

पिछले एक दशक के दौरान जब विदेशी कंपनियाँ व्यापार के लिए हमारे यहाँ आयीं तो उनका हमारी देशी भाषाओं के साथ एक खास स्तर पर सम्मिलन होने लगा - हिन्दी के साथ विशेष तौर पर बाहरी सांस्कृतिक संदेश चोला बदलकर हमारे समाज की अंदरूनी तहों में उतरने लगे। ९० के दशक में हॉलिवुड के एक बड़े फिल्म निर्माता स्टीफन स्पिलबर्ग ने जब अपनी बहुचर्चित फिल्म "जुरासिक पार्क" को हिन्दी में डब किया तो वे जैसे कि एक कारपोरेट रणनीति के लिए नये दरवाजे खोल रहे थे। "जुरासिक पार्क" हिन्दी में "डब" होकर

देश के छोटे-छोटे कस्बों और गाँवों तक पहुँच गयी। इसके पहले किसी विदेशी फिल्म ने भारत में इतना मुनाफा नहीं कमाया था। रूपर्ट मर्डोक जब स्टार टीवी लेकर भारत में आये तो उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता यही थी कि सभी तरह के कार्यक्रम हिन्दी में तैयार किये जाएँ। यहाँ सिर्फ देशी भाषा में अनुवाद की बात नहीं थी, बल्कि उससे एक कदम आगे बढ़कर विदेशी सांस्कृतिक छवियों को देशी मिजाज के अनुकूल गढ़ना था। स्टार टीवी ने अंग्रेजी कार्यक्रमों के माध्यम से भारत के शिक्षित वर्ग तक पहुँचने के लिए उसके पास कोई देशी मिजाज की सामग्री नहीं थी। ५ प्रतिशत से कम की दर्शक रेटिंग किसी विदेशी टीवी कार्यक्रम का इतना आर्थिक आधार नहीं बनाती कि प्रायोजक विज्ञापन लेकर उस कार्यक्रम की तरफ दौड़ें। परिणामस्वरूप स्टार टीवी ने न केवल समाचारों और विदेशी कार्यक्रमों को हिन्दी में दिखाना शुरू किया बल्कि उसने पॉप संगीत के देशी संस्करण भी बना डाले। थोड़े ही अर्से के भीतर हिन्दी में की ढब में ढले ये पश्चिमी कार्यक्रम मूल अंग्रेजी कार्यक्रमों से ज्यादा लोकप्रिय होने लगे। बीबीसी और डिस्कवरी चैनल अपने कार्यक्रमों को हिन्दी में भी प्रसारित करने लगे। आज लगभग सभी प्रमुख चैनलों पर बहुतायत हिन्दी कार्यक्रमों की है।

यह विश्व बाज़ार का हिन्दी भाषा के साथ बनने वाला एक नयी तरह का संबंध है। पिछले एक दशक में साबुन और टूथ पेस्ट जैसी सस्ती सामग्री से कहीं आगे जाकर अब उपभोक्ता विज्ञापन मोटर साइकिल, कार फ्रिज, टीवी, वाशिंग मशीन, महंगी प्रसाधन सामग्रियों, कीमती वस्त्रों, बचत और निवेश की योजनाओं आदि के लिए भी हिन्दी में बन रहे हैं। भागलपुर, बाराबंकी या भरतपुर में किसी सड़क के चौराहे पर अब आप वाशिंग मशीन या फ्रिज के हिन्दी में बनी होर्डिंग्स देख सकते हैं। भारत में उपभोक्ता वस्तुओं के बाज़ार का विस्तार हो रहा है। उपभोक्ता वस्तुएँ प्रांतीय राजधानियों और प्रथम श्रेणी के शहरों से आगे निकलकर मध्यम दर्जे के शहरों, नींद में अलसाए कस्बों और दूर-दराज के गाँवों तक पहुँच रही हैं। छोटे-छोटे कस्बों में ब्यूटी पार्लर खुल रहे हैं। रेबेन के चश्मे पहने कस्बाई युवक इतरा रहे हैं। दूसरे दर्जे के रेल यात्रियों के लगेज की शक्लें बदल रही हैं। दूर-दराज के इलाकों में बैंकों के क्रेडिट कार्ड और 'एटीएम' सेंटर खुल रहे हैं।

एक अध्ययन के अनुसार भारत में ३० करोड़ का मध्यमवर्गीय उपभोक्ता बाज़ार मौज़ूद है जो दुनिया के बहुत सारे देशों की आबादी से कहीं अधिक बड़ा है। हिन्दी के घोड़े पर सवार उपभोक्ता बाज़ार महानगरों की सीमाओं से बाहर निकल रहा है। कुछ वर्ष पहले सार्वजनिक क्षेत्र की एक अखिल भारतीय वित्तीय संस्था ने ७०० करोड़ रूपये के अपने बांडो का देशभर में विज्ञापन किया था। एक संसदीय प्रश्न के जवाब में उसे यह बताना था कि ४० करोड़ रूपये के प्रचार बजट को उसने कितना अंग्रेजी में खर्च किया है, कितना हिन्दी में। स्वयं वित्तीय संस्था के उच्च अधिकारियों को इसकी कोई ठोस जानकारी नहीं थी। विज्ञापन एजेंसी से जब विस्तृत सूचना माँगी गयी तो कुछ दिलचस्प आँकड़े आमने आये। तथ्य यह था कि एक आक्रामक बाज़ार रणनीति के तहत धुआँधार रेडियो, टेलिविजन, प्रचार होर्डिंग, समाचार पत्रों के विज्ञापन और हैंड बिलों के माध्यम से प्रचार राशि का ७० प्रतिशत हिस्सा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं पर ख़र्च किया गया था और केवल ३० प्रतिशत अंग्रेजी।

यह सब उस विज्ञापन एजेंसी ने बिना किसी सरकारी राजभाषा आदेश के स्वयं अपनी व्यावहारिक बाज़ार रणनीति और अपने ग्राहक सर्वेक्षण के आधार पर किया था। आज उपभोक्ता सामग्री बनाने वाली बहुत सी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वस्तुओं के साथ दिये जाने वाला लिटरेचर हिन्दी में भी छाप रही हैं। पर यह तस्वीर का एक पहलू है। विश्व बाज़ार की शक्तियों द्वारा भारत में एक माध्यम के रूप में हिन्दी का यह इस्तेमाल भारतीय समाज में परिवर्तन की मूलगामी शक्तियों के बारे में हमें आश्वस्त नहीं करता। बल्कि इस सारी प्रक्रिया में हिन्दी भाषा की एक विडम्बनात्मक स्थिति को ही हमारे सामने उजागर करता है। यह बाज़ार शक्तियों द्वारा हिन्दी भाषा की सामाजिक सम्प्रेषण की अन्तर्निहित क्षमताओं का अपने ढंग से अनुकूलन

करना है। यदि वास्तव में बाज़ार शक्तियों के साथ हिन्दी का विकासपरक संबंध बन रहा होता तो हिन्दी भाषा बाज़ार के तकनीकी पहलुओं के साथ भी उतनी ही तीव्रता से जुड़ रही होती।

यह सर्वविदित है कि विश्व बाज़ार में कम्प्यूटर, इन्टरनेट, वेब साइट और सेल फोनों की एक अहम् भूमिका है। मुंबई, बेंगलौर, न्यूयार्क, लंदन, तोक्यो, दुबई, सिंगापुर, क्वालालम्पुर, सिडनी और ब्यूनआयर्स के प्रभावशाली लोगों की एक ही भाषा है। इनके पास आर्थिक और राजनीतिक ताकत है। ये लोक एक कॉस्मोपालिटन, वैश्विक उपभोग मूलक विश्व संस्कृति के नुमाइन्दे हैं। सोनी, मर्डोक, एमटीवी, मैकडॉनॉल्ड, सीएनएन, मित्सुबिशी, फिलिप्स, लेवीस, नैस्ले, माइक्रोसॉफ्ट, इन्टेल जैसे विशाल निगमों का सारा कार्य व्यापार अंग्रेजी के माध्यम से हो रहा है। सच्चाई यह है कि इस नये सूचना समाज की यह १ प्रतिशत आबादी सारे संसार की ९९ प्रतिशत आबादी को नियंत्रित करती है। शेष ९९ प्रतिशत आबादी जो कम्प्यूटर शिक्षित नहीं है, जो बढ़िया अंग्रेजी नहीं बोल सकती, जो इन्टरनेट, वेब साइटों और सेल्युलर फोनों का इस्तेमाल नहीं कर पा रही, वह न सिर्फ इस नये शासक वर्ग से नियंत्रित है, बल्कि वह इस नये ग्लोबल इलेक्ट्रानिक बाज़ार के फायदों से भी वंचित है।

भारत विश्व बाज़ार की टेक्नॉलाजी से जुड़ तो रहा है पर केवल अंग्रेजी के माध्यम से। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की इन आधुनिक संचार साधनों में कोई उपस्थिति नहीं है जबकि विडम्बना यह है कि ९५ प्रतिशत भारतीय जनता हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करती है। दुनिया की एक बटा छह प्रतिशत आबादी का 'सूचना युग' और आधुनिक संचार प्रणालियों से कटे रहना न सिर्फ भारत की राजनीतिक, सामाजिक और तकनीकी स्थितियों के बारे में सवाल खड़ा करता है, बल्कि यह विश्व बाजा़र के लिए भी एक चुनौती बन जाता है। दूसरी ओर यह बात भी बेहद महत्वपूर्ण है कि गैर-अंग्रेजी सॉफ्टवेयर के विकास का मसला सिर्फ एक तकनीकी निर्णय नहीं है, यह भारतीय समाज की राजनीतिक सांस्कृतिक जटिलताओं से भी सीधे जुड़ा हुआ है।

इस समय विश्व बाज़ार में ८० प्रतिशत सॉफ्टवेयर पैकेज अमरीकी कंपनियों द्वारा बनाये जाते हैं। उनका लक्ष्य समूह अंग्रेजी में व्यवहार करने वाला ग्राहक रहा है। लेकिन स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप इन सॉफ्टवेयर कार्यक्रमों का विश्व का अन्य भाषाओं में स्थानीयकरण भी किया गया है। यूरोप की कई प्रमुख भाषाओं जैसे फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, नोर्वेजियन, फिनिश और स्वीडिश में ये सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। बल्कि इन्हें प्रयोग करने की सुविधा केटालॉन, रेहटो-रोमन भाषा और आइसलैंडिक जैसी अपेक्षाकृत कम प्रमुख भाषाओं में भी उपलब्ध है। फाएरो द्वीप समूह की भाषा के लिए भी ऐसे साफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जबकि वहाँ की कुल आबादी केवल ३८ हजार है। अमेरिकी कंपनियों के ये सॉफ्टवेयर कज़ाक या उज़्बेक भाषाओं के लिए भी उपलब्ध हैं। नार्वे की उत्तरी पहाड़ियों में रहने वालों के लिए विन्डोज़ एनटी का स्थानीय संस्करण तैयार किया गया है पर बिहार या उत्तर प्रदेश की जनसंख्या के लिए ऐसा कोई कार्यक्रम हाथ में नहीं लिया गया । सॉफ्टवेयर पैकेजों का अधिकांश भारतीय भाषाओं में स्थानीयकरण नहीं किया गया है, जबकि हिन्दी बोलने वालों की संख्या ही आज विश्व में तीसरे स्थान पर है। हिन्दी लगभग उतनी बोली जाती है जितनी अंग्रेजी या स्पेनिश बोली जाती है। इस स्थिति के लिए क्या कारण हो सकते हैं?

अमरिकी कंपनियों द्वारा विकसित सॉफ्टवेयरों को यहाँ की स्थानीय भाषाओं में न ढाल पाने का एक बड़ा कारण तो आर्थिक ही है। काई भी सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनी किसी स्थानीय विशेषता के अनुरूप सॉफ्टवेयर तभी बनायेगी जब उस उत्पाद के लिए बाज़ार उपलब्ध हो या भविष्य में उस माँग के बनने की संभावना उसे दिखती हो। भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर पैकेजों की माँग न होने की वजह से सॉफ्टवेयर बनाने वाली वे भारतीय कंपनियाँ भी इन पैकेजों के विकास पर ध्यान नहीं देतीं, जो विदेशी बाज़ारों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। आज़ादी के पाँच दशक बाद भी भारत में यदि विभिन्न राज्य सरकारों, कारपोरेट जगत और सम्पन्न

वर्ग के आपसी व्यवहार की भाषा अंग्रेजी ही बनी हुई है तो भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर मार्केट क्योंकर विकसित होगा ?

लेकिन इसके बावजूद कुछ बातों को नजर-अंदाज करना किसी के लिए भी मुश्किल है। भारत में दुनिया का सबसे बड़ा मध्यमवर्ग है। भारत में तेजी से विकसित होता हुआ एक औद्योगिक क्षेत्र है। हालाँकि विश्व में आर्थिक मंदी की स्थितियों के कारण इस समय हमारी समग्र औद्योगिक विकास दर २.९ प्रतिशत है, पर यदि हमारी औद्योगिक विकास दर आने वाले समय में एक सम्मानजनक स्तर पर पहुँचती है तो अधिकाधिक औद्योगिक प्रतिष्ठानों, व्यापारिक घरानों, बैंकों, शिपिंग कंपनियों, खुदरा व्यापारियों, पुस्तकालयों, पोस्ट ऑफिस कार्यालयों, मीडिया एजेंसियों आदि का यहाँ की आम जनता के साथ सम्पर्क बढ़ेगा और भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का बाज़ार विकसित होने की संभावनाएँ जन्म ले सकती हैं। चीनी भाषा तकनीकी दृष्टि से हिंदी भाषा से बहुत अधिक जटिल है, इसके बावजूद अमरिकी कंपनियों ने चीनी भाषा में अपने सॉफ्टवेयर कार्यक्रम बनाये हैं, क्योंकि चीन में एक विकसित होता हुआ एक विशाल बाज़ार है।

फिर भी सच यह है कि तकनीकी साधनों में देशी भाषाओं के प्रयोग का मुद्दा केवल एक आर्थिक और तकनीकी मुद्दा ही नहीं है, यह देश के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश से सीधे जुड़ा हुआ है। भारत में मुट्ठी भर अभिजात वर्ग सारे कार्य व्यापार का नियामक है और इस वर्ग की भाषा हिंदी नहीं है। तकनीकी सुविधाओं के हिंदी में उपलब्ध हो जाने के बाद भी जब तक कारोबार की संस्कृति और सोच की दिशा में बुनियादी परिवर्तन नहीं होता तब तक अन्य सारी प्रगति का कोई अर्थ नहीं है। जब तक संचार क्रांति को जन समाज से वास्तविक अर्थों में जोड़ने की इच्छा शक्ति नहीं जगती, तब तक समाज में अधिकार सम्पन्न वर्ग और साधनहीनों के बीच की वर्तमान खाई भी बनी रहेगी, बल्कि लगातार बढ़ती ही जायेगी। बदलाव और विकास दो अलग धारणाएँ हैं। विकास का संबंध जीवन स्तर की प्रगति, शिक्षा, स्वास्थ्य, संसाधनों और आर्थिक व सामाजिक अधिकारों से जुड़ा हुआ है। केवल बाज़ारवाद से गरीबी दूर नहीं हो सकती। उसमें आर्थिक प्रक्रिया में लोगों का शामिल होना, स्वास्थ्य, शिक्षा और सम्प्रेषण की तकनीकों का सुधरना, शिक्षा और सम्प्रेषण की तकनीकों का सुधरना, सामाजिक सुरक्षा का विस्तृत होना, निर्णय लेने की प्रक्रिया में आम लोगों की सहभागिता और उनकी उत्पादनशीलता का बढ़ना भी आवश्यक है। आर्थिक विकास और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं के इन्हीं संबंधों में भाषा की भूमिका अहम् हो जाती है।

सामान्यतया भाषा का विकास उसके बोलने वालों की विविध आवश्यकताओं के अनुरूप होता है। मनुष्य केवल आर्थिक प्राणी ही नहीं है। उसके सामाजिक, नैतिक और सौंदर्यबोध के मूल्यों को भी भाषा अभिव्यक्त करती है। राष्ट्र के उत्थान में भारतीय भाषाओं की विशेषकर हिन्दी की आज़ादी के पहले जो भूमिका रही है वह सर्वविदित है। आज़ादी के संघर्ष में यह साधारण और मेहनतकश जनता की मुक्ति की आकांक्षाओं की भाषा थी। इस भाषा में व्यापक जनता के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक आशय व्यक्त होते थे। अंग्रेजी के बरक्स यह भाषा एक काउंटर-फोर्स का रूप ले रही थी। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिन्दी भाषा संख्या की दृष्टि से संसार के समृद्ध देशों की भाषाओं के बीच एकाएक खड़ी तो हो गयी लेकिन नये ज्ञान-विज्ञान से उसका सार्थक रिश्ता कभी बनाया नहीं गया। यह भाषा अधिक से अधिक केवल साहित्य, पत्रकारिता और मनोरंजन की भाषा बनकर रह गयी है। इस भाषा को बोलने वालों की व्यापक आकांक्षाओं को हमारे यहाँ शक्ति केन्द्रों ने हमेशा ही दबाया है।

विज्ञान, कला, प्रशासन, वाणिज्य, चिकित्सा, विधि, प्रबंध विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि में हिन्दी के माध्यम से न तो कभी उच्च स्तर की शिक्षा की कोई व्यवस्था हुई और न ही उसे दैनंदिन काम-काज से जोड़ा गया। इस दिशा में जो थोड़े-बहुत कार्य होते रहे हैं, उनकी प्रकृति औपचारिक, दिखावटी और प्रवंचनापूर्ण ज्यादा है। हमारा शासक वर्ग जानता है कि एक बड़े जनमानस की भाषा को दबाया नहीं जा सकता, लेकिन साथ ही

उसे वास्तविक विकास की ओर उन्मुख भी नहीं करना है। इसका सबसे बड़ा कारण शक्ति केन्द्रों की वह औपनिवेशिक मानसिकता है जिसमें आमूलचूल परिवर्तन की कोई इच्छाशक्ति ही कहीं दिखाई नहीं देती। हिन्दी को सरकारी संरक्षण ने एक आत्मप्रवंचना की स्थिति में पहुँचा दिया है। अंग्रेजी जानने वाले कुछ लाख देश की ९० करोड़ जनता को हाँकते हैं। औपनिवेशिक शिक्षा के संस्कारों ने इन लोगों को गरीब जनता से नफरत करना सिखाया है। इन सत्ता-पुरूषों की एक अलग जीवन संस्कृति है और भाषिक अलगाव उसका सबसे बड़ा अस्त्र है।

सच्चाई यह है कि आज़ादी के बाद के इन तमाम दशकों में सरकारी कार्यालयों और संस्थाओं में राजभाषा हिन्दी का जो प्रयोग अब तक बढ़ा है, वह एक संविधानिक आवश्यकता को पूरा करने की औपचारिकता के रूप में ही अधिक बढ़ा है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी अधिकारियों, अनुवादकों, टाइपिस्टों और द्विभाषिक फार्मों की संख्या कामकाज में हिन्दी के महत्व को प्रदर्शित नहीं करती है, बल्कि एक सिनिकल और आत्मदया की स्थिति का ही निर्माण करती है। सरकारी कार्यालयों में इन हिन्दी अधिकारियों और अनुवादकों की फौज इसलिए खड़ी की गयी है ताकि ये हिन्दी को एक प्रदर्शन की वस्तु में बदल डालें। संस्थानों में हिन्दी अधिकारी और हिन्दी अनुवादक अंग्रेजी की मुख्यधारा में हिन्दी के द्वीप बने बैठे हुए हैं जबकि संस्थान की सारी कार्य संस्कृति अंग्रेजी में ही बनी रहती है, उसमें रत्ती भर भी बदलाव नहीं आता।

बाज़ार में हिन्दी की वास्तविक प्रगति तो तभी देखी जा सकती है जब वह सम्प्रेषण, कार्यकुशलता और लाभप्रदता की तमाम कारपोरेट योजनाओं का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग हो। वह आर्थिक कारोबार की समूची संस्कृति और संस्कार को अभिव्यक्त करने वाली भाषा हो। आज केवल माल बेचने और गाँव-कस्बों में नये बाज़ार बनाने के लिए हिन्दी का जो प्रयोग हो रहा है, वह एक तदर्थ और व्यावहारिक उद्देश्य के लिए है, किसी व्यापार आदर्श, राष्ट्र निर्माण या मूलगामी परिवर्तन के लिए नहीं। कारोबार में किसी उच्च प्रशासनिक बैठक का वार्तालाप हिन्दी में नहीं होता, कोई रिसर्च पेपर या व्यावसायिक रिपोर्ट हिन्दी में नहीं लिखी जाती, कोई कार्य-प्रशिक्षण हिन्दी में नहीं दिया जाता, कोई कार्यालय नोट या व्यावसायिक विश्लेषण हिन्दी में तैयार नहीं होता। कॉरपोरेट संस्कृति में हिन्दी के लिए कोई जगह नहीं है।

व्यावसायिक लाभप्रदता, परिवर्तन और भाषा के आपसी संबंध सूत्र खोजने के बारे में आज भी कोई ठोस कार्यक्रम नहीं हैं। विज्ञापन एजेंसियों में सारे विज्ञापन पहले अंग्रेजी में बनते हैं, बाद में जैसे-तैसे उनका कामचलाऊ अनुवाद कर दिया जाता है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के नाम पर अनुवाद की ऐसी कृत्रिम ओर अटपटी भाषा तैयार हुई है जो आम जनता के लिए अंग्रेजी जितनी ही दुरूह है। छोटे-छोटे गाँवों और कस्बों से शक्ति केन्द्रों की ओर आने वाली आम जनता सरकारी कार्यालयों की इस कृत्रिम हिन्दी को अपना नहीं पाती क्योंकि इस हिन्दी का भाषिक रजिस्टर आम जनता की बोलियों से निर्मित नहीं है। यह भाषा भारत की विशाल जनता से संवाद की किसी बुनियादी इच्छा पर आधारित ही नहीं है। वह नये ज्ञान-विज्ञान और सूचना को आत्मसात कर उसे जातीय संस्कार देना नहीं चाहती। इसलिए अनुवाद की भाषा के वाक्य विन्यास में कहीं आत्मीयता का पुट नहीं है। वह संस्कार के स्तर पर निर्वैयक्तिक और जड़ाऊ भाषा है। अनुवाद की इस कार्य संस्कृति में परिवर्तन की किसी व्यापक राजनीति का स्वप्न अनुपस्थित है। यदि ऐसा न होता तो कामकाज की इस हिन्दी भाषा में वह जीवन्तता और तनाव दिखायी देते जो एक भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को प्रतिबिंबित कर रहे होते। दरअसल भाषा का यह रूप वर्चस्व की उन्हीं ताकतों की नाभि-नाल से जुड़ा हुआ है, जो तमाम सार्वजनिक जीवन और उसकी आकांक्षाओं का संस्थानीकरण करती रहती हैं।

अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के साथ निश्चय ही आने वाले वर्षों में निजी क्षेत्र का प्रभाव काफी बढ़ेगा। क्या पश्चिम से आयातित विचारों, तकनीक और जीवन शैली के साथ-साथ अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता नहीं जायेगा? सीमित स्वार्थों के लिए व्यापार जगत में हिन्दी और भारतीय भाषाओं को व्यापक जन-समाज में

बुनियादी परिवर्तन की आकांक्षाओं से काटते हुए निरंतर अंग्रेजीमय बनाते जाना कुछ नहीं अजीबोगरीब स्थितियों को जन्म देगा। यह विरूपीकरण हमारी व्यापारिक संस्कृति में दिखाई भी पड़ने लगा है। टेलिविजन पर उपभोक्ता सामग्री के विज्ञापनों में हम इस विरूपीकरण को देख रहे हैं, हिन्दी और अंग्रेजी की अजीबोगरीब खिचड़ी को भाषा का कोई विकसित रूप नहीं कहा जा सकता। भाषा की अशुद्धता आपत्तिजनक नहीं है। आपत्तिजनक यह है कि यह नयी खिचड़ी भाषा ऐसे खाते-पीते वर्ग की जीवन-शैली और मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली भाषा है जिसका जीवन दर्शन ही भोग विलास, शोषण, स्वार्थ बर्बरता स्पर्धा और आत्मकेन्द्रिता पर टिका है। इस खिचड़ी भाषा में वंचित जनता की मार्मिक स्थितियों की कोई छवि नहीं है, उनके जीवन का कोई तनाव व्यक्त नहीं होता।

विश्व बाज़ार की नयी स्थितियों में यही हिन्दी भाषा की सबसे बड़ी विडम्बना है। हिन्दी भाषा को उसके मूल स्वभाव और आकांक्षा से दूर किया जा रहा है। हिन्दी केवल माल बेचने की भाषा बन रही है। वह केवल लालसाओं और मरीचिकाओं की भाषा बन रही है। वह एक ऐसे चमकीले संसार का हिस्सा बन रही है, जिसका भारत की करोड़ों की संख्या में अल्पशिक्षित और मूक जनता से कोई संबंध नहीं। जनता इस स्थिति को केवल मुँह बाये खड़े देख रही है। भाषा को उसके बुनियादी संस्कार से काट देने में मीडिया की यह भूमिका भविष्य में और अधिक बढ़ते ही जाने की संभीवना है। भाषिक प्रयोग में जनता की अपनी स्मृतियाँ जुड़ी होती हैं। भारत की विशाल अल्पशिक्षित और साधनहीन जनता खाते-पीते वर्ग की मस्ती, उपभाग अय्याशी और हिंसा को प्रतिदिन टेलीविजन पर अपनी भाषा के माध्यम से प्रकट होते देख रही है। यही विश्व बाज़ार में आज हिन्दी की कुल भूमिका है। हमें इससे निपटने और बाहर आने के रास्ते खोजने हैं।

माँ

सचिन कुमार शर्मा
निम्न श्रेणी लिपिक

रिश्तों के तो नाम कई हैं, पर माँ होना आसान नहीं है ।
अपना हर एक ख्वाब भुलाकर, खुश रहना आसान नहीं है ।।

हर एक काम है माँ के जिम्मे, समय सारणी सख्त बड़ी है ।
पल पल काम में उलझे रहना, सच जानो आसान नहीं है ।।

माना यह अहसान नहीं है, किसी पर इल्जाम नहीं है ।
पर अन्तर्मन की अभिलाषा को, भुला पाना आसान नहीं है ।।

घर छोड़ो तो घर बिगड़ेगा, मन तोड़ो तो मन बिगड़ेगा ।
दोनों को समेट कर चलना, यह भी तो आसान नहीं है ।।

सबसे कठिन तो तब लगता है, जब कोई समझ नहीं पाता ये -
कैसे माँ ने पूरी की है, हर रिश्ते की जिम्मेदारी ।।

कर कर के भी नाम न मिलना, हक का वो सम्मान न मिलना ।
हँस कर सब कुछ टालते रहना, बिल्कुल भी आसान नहीं है ।।

अच्छा स्वास्थ्य एवं उपाय

लता कुमारी
पुत्री श्री प्रकाश चन्द, सहायक, आगरा

अच्छे व लम्बे जीवन के लिए जरूरी है स्वास्थ्य, जिसकी कामना करने वाले तो बहुत हैं पर प्रयत्न करने वाले बहुत कम हैं । अच्छे स्वास्थ्य वाला व्यक्ति हमेशा खुश व चिन्तामुक्त रहता है । अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वस्थ जीवनशैली अपनानी चाहिए जैसे स्वच्छ एवं स्वास्थप्रद भोजन, नियमित व्यायाम जैसे सैर व दौड़, पर्याप्त नींद व सकारात्मक सोच । सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हमेशा खुश रहता है व अपने और दूसरों के लिए हमेशा अच्छा सोचता है ।

हमें फल, हरी सब्जियाँ, दूध दाल व हर वह चीज़ खानी चाहिए जिसमें सभी पोषक तत्व मौजूद हों जैसे प्रोटीन, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट, वसा व खनिज । पोषक तत्वों की सही मात्रा लेना हमारे लिए बहुत जरूरी है । इनकी अधिक या कम, दोनों ही मात्राएं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती हैं । योग शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए बेहतर औषधि माना जाता है । विज्ञान आयुर्वेद में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योगासन व अन्य उपायों की चर्चा की गई है । आयुर्वेद बताता है कि मानव किस मौसम के हिसाब से किस तरह की जीवन शैली अपनाए ।

अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हमारा मानसिक स्वास्थ्य ठीक होना बहुत जरूरी है क्योंकि खराब मानसिक स्वास्थ्य हमारे 'फोकस की कमी' का कारण बन सकती है । मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए हम अन्य प्रयास भी कर सकते हैं जैसे सॉफ्ट म्यूजिक सुनना, जो कह हमारे दिमाग को शान्त रखने में मदद करता है । कोई लक्ष्य निर्धारित कार्य करके व कोई रचनात्मक कार्य करके भी हम अपने मन को शान्त रख सकते हैं । नकारात्मक विचारों से दूर रहना भी मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है ।

मन, शरीर के अन्य सभी अंगों को नियंत्रित करता है व हमारे शरीर की सम्पूर्ण कार्यप्रणाली को प्रभावित करता है । शारीरिक व मानसिक रूप से उचित संतुलन होने पर ही किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वस्थ कहा जा सकता है । स्वस्थ जीवनशैली हमारे स्वस्थ जीवन का मूल आधार है । स्वस्थ जीवन शैली न केवल हमें लम्बा जीवन जीने में बल्कि बीमारियों से दूर रहने में भी मदद करती है ।

"अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन के सभी सुखों का आधार है ।"

कविता

(संकलित) - राम कृष्ण दुबे,
आशुलिपिक ग्रेड-III, प्रयागराज

तू जिंदगी को जी, उसे समझने की कोशिश न कर ।
सुन्दर सपनों के ताने बाने बुन, उसमें उलझने की कोशिश न कर ।
चलते वक्त के साथ तू भी चल, उसमें सिमटने की कोशिश न कर ।
उपने हाथों को फैला खुलकर सांस ले, अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर ।
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे, खामख्वाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर
कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे, सब कुछ खुद सुलझाने की कोशिश न कर ।
जो मिल गया उसी में खुश रह, जो सूकून छीन ले वो पाने की काशिश न कर ।
रास्ते की सुदंरता का लुफ्त उठा, मंजिल पर जल्दी पहुंचने की कोशिश न कर !!

बोलती आँखें

विकास कुमार उमराव
एमटीएस, आगरा

आँखों की है बात अजब सी, नैनों का संसार निराला ।
आँखों में बसती है दुनिया, नज़रों से दिखता जग सारा ।।

गुस्से में दिखती यह लाल, नीली आँखों की क्या बात ।
कजरारी गहरी से आँखें, इनकी है न कोई बिसात ।।

गहराई जो आँखों की है, थाह न इनकी मिल पाई ।
नशीली आँखों संग नर्तकी, एक निराली छवि पाई ।।

मांणा, नखुना, भिन्न कष्ट, व्याधि की अपनी अलग कहानी ।
गुस्सा, ममता, प्रेम, तपस्या, सबसे ढंग अरु बात निराली ।।

प्यार आँख में जब दिखता, घाव जिगर तक कर जाता ।
दिल में बेचैनी बढ़ती, कहीं भी मन बिल्कुल न लगता ।।

आँख मिलाना, आँख मारना, बोझल पलकों के भिन्न नजारे ।
दिल की बातें इनसे समझें, आँखों के हैं गजब इशारे ।।

आँखों में इतिहास छुपा है, आँखों में हर राज छुपा है ।
करुणा ममता की यह सागर, इनमें इक सैलाब छुपा है ।।

आँखों में संसार है बसता, आँखों में है प्यार उमड़ता ।
व्यक्त न हो पाए शब्दों में, ऐसा राज भी इनमें छुपता ।।

वो सपने हमेशा सच नहीं होते
जो सोते वक्त देखे जाते हैं,
लेकिन वो सपने अवश्य सच होते हैं,
जिनके लिए आप सोना छोड़ देते हैं ।

दिनांक 14.09.2022 एवं 15.09.2022 को सूरत (गुजरात) में आयोजित दो दिवसीय द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता

भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में दिनांक 14 एवं 15 सितम्बर 2022 को पण्डित दीनदयाल उपाध्याय इण्डोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा से श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने उक्त कार्यक्रम में सहभागिता की । संगठन के मुख्यालय से हिंदी अधिकारी (डा.) श्रीमती वैशाली चिरडे तथा कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, वड़ोदरा से श्री के.पी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक, श्री तेजवीर सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक तथा कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, पश्चिमी अंचल, मुम्बई के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए ।

राजभाषा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी

» 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई ।
» राजभाषा अधिनियम 1963 को लागू हुआ । राजभाषा अधिनियम की 9 धाराएँ हैं ।
» राजभाषा नियम 1976 में अस्तित्व में आया ।
» राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के अन्तर्गत आता है ।
» राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत मुख्यत: 12 नियम आते हैं ।
» राजभाषा नियम के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों का जवाब हिंदी में दिया जाना अनिवार्य है ।
» राजभाषा नियम के नियम 2 के तहत भारत के प्रदेशों / संघ शासित राज्यों को तीन वर्गों क्रमश: क, ख, ग क्षेत्रों में बांटा गया है । यह विभाजन हिंदी के ज्ञान के आधार पर किया गया है ।
» किसी भी कार्यालय में राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करवाने का दायित्व कार्यालय प्रधान का है ।
» संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी का प्रसार बढ़ाए ।
» संसद की राजभाषा समिति 1959 का एक अन्य नाम गोविन्द बल्लभ पंत समिति भी है ।

<u>कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा में</u>

<u>दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक</u>

<u>आयोजित हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां</u>

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा में आयोजित विविध गतिविधियों की झलकियाँ

दिनांक 26.04.2022 को वर्ष 2022 - 2023 की प्रथम त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया ।

दिनांक 20.05.2022 को मध्यांचल आ्रगरा कार्यालय में आतंक विरोधी दिवस का आयोजन कर अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण किया गया ।

दिनांक 26.11.2022 को ''संविधान दिवस'' के उपलक्ष्य पर कार्यालय प्रमुख श्री विनोद कुमार मिश्रा, सं.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ ली ।

दिनांक 16.02.2023 को कार्यालय प्रमुख श्री विनोद कुमार मिश्रा, सं.मु.वि.नि. एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने नराकास, आगरा की छमाही बैठकों में भाग लिया एवं कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान किया ।

दिनांक 16.02.2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 80वीं बैठक में
कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा को हिंदी पत्राचार में विशेष स्थान प्राप्त करने के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया ।

<u>कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा में आयोजित राजभाषायी गतिविधियां</u>

दिनांक	**गतिविधियां**
26.04.2022	वर्ष 2022 - 2023 की प्रथम त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।
26.05.2022	वर्ष 2022 - 2023 की प्रथम त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा कार्यालय विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।
12.07.2022	वर्ष 2022 - 2023 की द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।
25.08.2022	श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा कार्यालय उप-मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।
14 एवं 15.09.2022	श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने सूरत (गुजरात) में माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया।
27.09.2022	'पेसो में राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन' विषय पर कार्यालय मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा आयोजित कार्यशाला में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।
29.09.2022	वर्ष 2022 - 2023 की द्वितीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।
09.11.2022	श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, श्री अशोक कुमार, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में भाग लिया ।

16.11.2022 वर्ष 2022 - 2023 की तृतीय त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

23.12.2022 वर्ष 2022 - 2023 की तृतीय त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला ऑनलाइन आयोजित की गई । उक्त कार्यशाला में अंचल कार्यालय तथा अधीनस्थ उपांचल कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

20.01.2023 वर्ष 2022 - 2023 की चतुर्थ त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

31.01.2023 श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 'संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली को भरना' विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया ।

16.02.2023 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक एवं श्रीमती श्रावणी गांगुली, अनुवादक ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक में भाग लिया ।

<u>कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, मध्यांचल, आगरा में आयोजित अन्य विविध गतिविधियां</u>

19.04.2022 ''ऑटो इन्वर्ड'' विषय पर नागपुर कार्यालय द्वारा आयोजित ऑनलाईन बैठक में इस अंचल के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

20.04.2022 नागपुर कार्यालय द्वारा आफीसर्स एसोसिएशन का ऑनलाईन बैठक आयोजित की गई जिसमें अंचल के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

28.04.2022 एनएपीईएस एवं टेस्टिंग स्टेशन, गोण्डखेरी द्वारा ''Manufacturing of AN, AN melt and conversion of AN melt into solid AN, provision of NEPA 490'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में मध्य अंचल के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

20.05.2022 आतंक विरोधी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया एवं शपथ ग्रहण की ।

31.05.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने डीआईपीपी द्वारा आयोजित ऑनलाईन बैठक में भाग लिया ।

21.06.2022 योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें योगाचार्य को आमंत्रित कर योग सम्बन्धी कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

27.06.2022 डा० महेश कुमार सामोता, विस्फोटक नियंत्रक माननीय जिला उपभोक्ता पारितोष विवाद आयोग, आगरा के न्यायालय में उपस्थित हुए ।

03.08.2022 श्री अशोक कुमार, उप विस्फोटक नियंत्रक ने होटल आगरा इन में मै० हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड, आगरा द्वारा पेसो कम्प्लाएन्सेज (एनएनडब्ल्यूएस एवं ईज़ ऑफ डूईंग बिजीनेस) विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया ।

18.08.2022 श्री अशोक कुमार मेहता, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं डा० महेश कुमार सामोता, विस्फोटक नियंत्रक ने एनएपीईएस एवं परीक्षण स्टेशन गोण्डखेरी द्वारा जीएफआर 2017 एवं जेम विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

26.08.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा एवं श्री डी०वी०सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून ने ऑयल कम्पनियों द्वारा देहरादून में आयोजित कार्यशाला में भाग लिया ।

27.08.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने नोएडा विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ बैठक में भाग लिया ।

10.10.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने प्रयागराज में मैसर्स बीपीसीएल के अधिकारियों के साथ बैठक की । उक्त बैठक में प्रयागराज कार्यालय के अधिकारियों ने भी भाग लिया ।

11.10.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने प्रयागराज में मैसर्स आईओसीएल के अधिकारियों के साथ बैठक की । उक्त बैठक में प्रयागराज कार्यालय के अधिकारियों ने भी भाग लिया ।

17.10.2022 श्री कमलजीत सिंह, सेक्शन ऑफीसर, डीपीआईआईटी, नई दिल्ली ने स्वच्छता अभियान के तहत इलाहाबाद कार्यालय का निरीक्षण किया ।

23.11.2022 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने एलएसडीए के सम्बन्ध में डीपीआईआईटी, नई दिल्ली के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया ।

31.10 - 06.11.2022 अंचल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया ।

26.11.2022 संविधान दिवस के अवसर पर डीपीआईआईटी द्वारा वीडियो कांफ्रेन्सिंग द्वारा आयोजित मीटिंग में अंचल कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया एवं संविधान के प्रति पूर्ण निष्ठा की शपथ ली ।

05 एवं 15.12.2022 मुख्यालय नागपुर द्वारा एलएसडीए मॉड्यूल के सम्बन्ध में जिला प्राधिकारियों के साथ वीडियो कांफ्रेन्सिंग द्वारा आयोजित मीटिंग में श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक एवं अधीनस्थ उपांचल के सभी अधिकारियों ने भाग लिया ।

03.01.2023 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने नागपुर कार्यालय द्वारा Permission for setting up of EV charging infrastructure at CNG station and Retail Outlet of Oil Marketing Companies विषय पर आयोजित वीडियो कांफ्रेन्सिंग में भाग लिया ।

10.02.2023 श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने श्रीमान मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा आयोजित ऑनलाईन बैठक में भाग लिया ।

<u>कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, इलाहाबाद में आयोजित राजभाषायी गतिविधियां</u>

<u>दिनांक</u>	**<u>गतिविधियां</u>**
12.04.2022	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की ७१वीं छमाही बैठक में इस कार्यालय से कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि., श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. व श्री राम कृष्ण दुबे, आशुलिपिक ने भाग लिया ।
20.05.2022	कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2022-23 की प्रथम तिमाही की बैठक का आयोजन किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया गया एवं वित्तीय वर्ष 2022-23 की वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा की गई। सभा में सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।
29-06-2022	कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्री आर. के. मंडलोई, उप.वि.नि. ने "राजभाषा विभाग द्वारा जारी वित्तीय वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम के क्रियान्वयन" विषय पर व्याख्यान दिया तथा उसके पालन करने के संबंध में सभी संबंधित कर्मचारियों को निर्देश दिए। सभा में सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

02.09.2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2022-23 की द्वितीय तिमाही की बैठक का आयोजन किया गया। सभा में हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस तथा त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला के आयोजन सम्बन्धी निर्णय लिए गए । सभा में सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे ।

14.09.2022 हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ किया गया एवं हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अधिकारियों द्वारा माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी द्वारा, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के सचिव श्री अनुराग जैन द्वारा एवं मंत्रीमंडल सचिव श्री राजीव गौबा, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिए गये संदेश को पढ़कर सुनाया गया ।

22/09/2022 हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि व वक्ता के रूप में श्री मानस कुमार सिन्हा, सहायक पंजीकार, सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण, इलाहाबाद ने "हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में कार्यालयों का योगदान" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया । कार्यालय में किये जा रहे हिंदी कार्यो की समीक्षा की गई ।

27.09.2022 मुख्यालय नागपुर द्वारा आयोजित आनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता डॉ. (श्रीमती) वैशाली एस. चिरडे, हिंदी अधिकारी, मुख्यालय, नागपुर ने "पेसो में राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

29/09/2022 हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समापान समारोह में डॉ. (श्रीमती) आर. आर. गुप्ता, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने पुरस्कारों की घोषणा की।

19.10.2022 श्री सुशील भल्ला, सेक्शन ऑफीसर, डीपीआईआईटी, नई दिल्ली ने स्वच्छता अभियान के तहत इलाहाबाद कार्यालय का निरीक्षण किया ।

20.12.2022 नराकास, इलाहाबाद की 72वीं छमाही बैठक में इस कार्यालय से कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, उप.मु.वि.नि, श्री आर.के.मंडलोई, उप.वि.नि. व श्री रामकृष्ण दुबे, आशुलिपिक ने भाग लिया। बैठक में माननीय श्री संजय अवस्थी, मुख्य आयकर आयुक्त, इलाहाबाद ने कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर.गुप्ता, उप.मु.वि.नि. को कार्यालय द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान अपने कार्यक्षेत्र में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में योगदान हेतु विशेष पुरस्कार स्वरूप चल वैजन्ती शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

23.12.2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2022-23 की तृतीय तिमाही बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । सभा में, दिनांक 28.12.2022 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के आयोजन का निर्णय लेकर बैठक का कार्यवृत्त भी जारी किया गया ।

28.12.2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि व वक्ता के रूप में श्री हरी कृष्ण तिवारी, सहायक निदेशक व सचिव, नराकास, इलाहाबाद ने भाग लिया तथा उन्होंने "राजभाषा नियम व अधिनियम के संवैधानिक प्रावधान" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। सभा में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज में आयोजित अन्य विविध गतिविधियां

19-04-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि., श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. ने नागपुर कार्यालय द्वारा **"आटो इन्वर्ड"** विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया।

20-04-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि., श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. ने नागपुर कार्यालय द्वारा **"पेसो आफिसर एसोसिएशन"** पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया।

28-04-2022 श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. ने NAPES&TS, गोंडखैरी, नागपुर कार्यालय द्वारा **"Manufacturing of Ammonium Nitrate, AN Melt and Conversion of AN melt into solid AN. Provision of NFPA H90 "** विषय पर आयोजित वेबिनार में भाग लिया।

02-05-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में परचेज कमेटी के गठन हेतु एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

20-05-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में एक प्रशासनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा में जेम से संबंधित कार्य, आइजन वाल्ट एवं डिजिटाइजेशन के कार्य एवं कार्यालय परिसर में कैमरा लगवाने हेतु आदि मुद्दों पर चर्चा की गयी।

20-05-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में आंतक विरोधी दिवस मनाने हेतु एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस अवसर पर एक साथ शपथ ली।

26-05-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में NSWS के प्रमोशन हेतु एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा में निर्देशानुसार NSWS पोर्टल के बारे में जानकारी दी गयी।

31-05-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में एक प्रशासनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। सभा में चैन्नई कार्यालय द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूकता के पैमाने भेजे गये ज्ञापन पर चर्चा की गयी एवं परिसर व सूचना पट्ट पर पोस्टर भी चिपकाया गया। सभा में स्टेशनरी के समानों के खरीददारी हेतु भी चर्चा की गयी।

14-06-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में 21 जून, 2022 को योग दिवस मनाने हेतु एक प्रशासनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय परिसर में पोस्टर चिपकाने, बैनर प्रदर्शित करने एवं योग प्रशिक्षक को बुलाने हेतु चर्चा की गयी। सभा में सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

21-06-2022 योग दिवस मनाया गया जिसमें योगाभ्यास हेतु श्री चंद्रशेखर प्रधान, योग प्रशिक्षक पधारे एवं उनके मार्गदर्शन में सभी ने योगाभ्यास किया।

21-06-2022 श्री वी.के. मिश्रा, संमुविनि, आगरा की अध्यक्षता में वाराणसी स्थित एलपीजी बाटलिंग प्लांट में "Safety Management in LPG Bottling Plant" विषय पर कार्यालय उपमुविनि, इलाहाबाद एवं मै. आईओसीएल, एलपीजी बाटलिंग प्लांट, वाराणसी द्वारा संयुक्त रूप से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. ने "SMPV(U) Rules, 2016" पर एवं श्री आर. के. मंडलोई, उविनि ने "Gas Cylinder Rules, 2016" पर पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन द्वारा व्याख्यान दिया।

15-07-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि., श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. एवं कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने NAPES&TS, गोंडखैरी, नागपुर कार्यालय द्वारा **"RTI Act, 2005 "** विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया।

10-08-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में एक प्रशासनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा में सभी कर्मचारियों के बीच डिजिटल स्कैनिंग की स्पीड बढ़ाने एवं दिन-ब-दिन बेसिस पर कार्य करने पर चर्चा की गयी एवं सभी कर्मचारियों को निर्देश दिया गया।

18-08-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि., श्री आर.के. मंडलोई, उप.वि.नि. एवं कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने NAPES&TS, गोंडखैरी, नागपुर कार्यालय द्वारा **"GFR, 2017, GeM, Retirement & Pension"** विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया।

10 एवं 11.10.2022 श्री वी.के. मिश्रा, संमुविनि, आगरा की अध्यक्षता में डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. एवं श्री आर. के. मंडलोई, उविनि ने मै. बीपीसीएल, इलाहाबाद द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में भाग लिया।

13-10-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. के कक्ष में उनकी अध्यक्षता में एक प्रशासनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा में कार्यालय मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर के सर्कुलर के अनुसार स्पेशल कैंपेन 2.0 के फेस-II जोकि दिनांक 02.10.2022 से 31.10.2022 तक होगा, के अनुसार कार्य करने एवं उसको सफल बनाने पर चर्चा की गयी।

19-10-2022 श्री सुशील भल्ला, ए.ओ., डीपीआईआईटी, नयी दिल्ली ने स्पेशल कैंपेन 2.0 के फेस-II के तहत कार्यालय का निरीक्षण किया।

02 एवं 03.11.2022 कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने DPIIT & MOC&I, नयी दिल्ली द्वारा "Workshop Lecture on Preventive Vigilance" एवं "Training Session on How to Conduct Inquiry" विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया।

26-11-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. की अध्यक्षता में संविधान दिवस मनाने हेतु एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा। साथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने DPIIT, नयी दिल्ली द्वारा संविधान दिवस पर आयोजित विडियो कांफ्रेस में भी भाग लिया।

05-12-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. एवं श्री आर. के. मंडलोई, उविनि ने नागपुर कार्यालय द्वारा पेसो के सभी कार्यालयों हेतु "Implementation of LSDA Module" विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया।

15-12-2022 कार्यालय प्रमुख डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. एवं श्री आर. के. मंडलोई, उविनि ने नागपुर कार्यालय द्वारा District Authorities हेतु "Implementation of LSDA Module" विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया।

03-01-2023 डॉ.(श्रीमती) आर.आर. गुप्ता, उप.मु.वि.नि. एवं श्री आर. के. मंडलोई, उविनि ने DPIIT & MOC&I द्वारा "Meeting to discuss the issue related to permission for setting up of EV charging infrastructure at CNG station and Retail outlets of Oil Marketing Companies (OMC's)" विषय पर आयोजित आनलाइन कार्यशाला में भाग लिया। यह सभा डीपीटआईआईटी के Additional Secretary की अध्यक्षता में आयोजित की गयी।

26.01.2023 सीपीडब्ल्यूडी, इलाहाबाद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित गणतंत्र दिवस को मनाने हेतु इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर कार्यालयाध्यक्ष डॉ.(श्रीमती) आर. आर. गुप्ता, उपमुविनि महोदया ने संक्षिप्त व्याख्यान दिया एवं सभी को बधाई दी

22.02.2023 श्री जरीफुद्दीन अहमद ने उप विस्फोटक नियंत्रक से पदोन्नति होकर विस्फोटक नियंत्रक के पद पर अपना कार्यभार ग्रहण किया।

<u>कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज में आयोजित राजभाषायी गतिविधियों की झलक</u>

दिनांक 20.12.2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद द्वारा आयोजित छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख डा० (श्रीमती) आर० आर० गुप्ता, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक एवं श्री राहुल कुमार मण्डलोई, उप विस्फोटक नियंत्रक ने भाग लिया । उक्त बैठक में कार्यालय को राजभाषायी कार्यों के लिए विशेष पुरस्कार स्वरूप चल वैजयंती प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

<u>हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा एवं त्रैमासिक हिंदी सभाओं एवं कार्यशालाओं के आयोजन की झलक</u>

कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, प्रयागराज में आयोजित अन्य विविध गतिविधियों की झलक

दिनांक 21.06.2022 को कार्यालय में योग दिवस का आयोजन किया गया

दिनांक 19-10-2022 को श्री सुशील भल्ला, ए.ओ., डीपीआईआईटी, नयी दिल्ली द्वारा
स्पेशल कैंपेन 2.0 के फेस-II के तहत कार्यालय के निरीक्षण किया गया

दिनांक 26.11.2022 को संविधान दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा शपथ ली गई

<u>कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में आयोजित राजभाषायी गतिविधियां</u>

दिनांक	**गतिविधियां**
25.05.2022	कार्यालय प्रमुख डा० बी०सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक की अध्यक्षता में प्रथम त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।
24.06.2022	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देहरादून द्वारा आयोजित ऑनलाइन छमाही बैठक में सम्मिलित होकर चर्चा की गई । कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उक्त ऑनलाइन बैठक में भाग लिया ।
25.08.2022	श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।
05.09.2022	द्वितीय त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया । उक्त बैठक में हिंदी पखवाड़ा के आयोजन पर चर्चा की गई एवं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।
14.09.2022 -	हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन कर उसके अन्तर्गत हिंदी दिवस कार्यक्रम एवं विभिन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
27.09.2022	श्रीमान उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, गोंडखेरी द्वारा वेबेक्स पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालयीन भाषा में सुधार पर डा० वैशाली एस० चिरडे, हिंदी अधिकारी, नागपुर द्वारा व्याख्यान दिया गया । कार्यशाला में श्री डी० वी० सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं हिंदी अधिकारी ने भाग लिया ।

25.11.2022 सर्वे आफ इंडिया, देहरादून में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही हिंदी बैठक में कार्यालय प्रमुख डा०बी.सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने भाग लिया ।

23.12.2022 श्रीमान उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, गोंडखैरी, नागपुर द्वारा वेबेक्स पर कार्यशाला का आयोजन किया गया । उक्त कार्यशाला में डा० वैशाली एस० चिरडे, हिंदी अधिकारी, नागपुर द्वारा ''कार्यालयीन भाषा में सुधार'' विषय पर व्याख्यान दिया गया । कार्यशाला में श्री डी.वी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं हिंदी अधिकारी ने भाग लिया ।

23.12.2022 कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा द्वारा ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती श्रावणी गांगुली, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आगरा द्वारा त्रैमासिक हिंदी रिपोर्ट एवं संसदीय समिति निरीक्षण रिपोर्ट पर चर्चा की गई । कार्यशाला में इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

27.12.2022 तृतीय त्रैमासिक हिंदी बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

<u>कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में आयोजित अन्य विविध गतिविधियां</u>

20.05.2022 कार्यालय में आतंक विरोधी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्री डी.वी.सिंह, उप-विस्फोटक नियंत्रक ने सभी कर्मचारियों को शपथ दिलाई ।

21.06.2022 अन्र्तराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

12.07.2022 कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, गोंडखैरी, नागपुर द्वारा वेबेक्स के माध्यम से विस्फोटक स्टेक होल्डर्स के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री डी० वी० सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं डा० एस०पी०यादव, उप विस्फोटक नियंत्रक ने भाग लिया ।

15.07.2022 कार्यालय उप मु०वि०नि० गोण्डखेरी, नागपुर द्वारा वेबेक्स के माध्यम से "सूचना के अधिकार अधिनियम- 2005" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री डी० वी० सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं जनसूचना अधिकारी ने भाग लिया ।

18.08.2022 कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, गोण्डखेरी, नागपुर द्वारा वेबेक्स के माध्यम से जीएसटी, आरटीआई आदि पर कार्यशाला का आयोजन किया गया । डा. बी.सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, श्री डी.वी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक एवं श्री कुलवन्त सिंह, उच्च श्रेणी लिपिक ने भाग लिया ।

26.08.2022 ऑयल कंपनियों द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया गया । श्री विनोद कुमार मिश्रा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, आगरा एवं डा० बी.सिंह, सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून ने रिटेल आउटलेटस परिसरों पर प्रेजेंटेशन दिया । कार्यशाला में श्री डी.वी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून ने भाग लिया ।

31.10.2022 श्री शम्भू दत्त सती, अवर सचिव, डीपीआईआईटी, उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा कार्यालय में डिजिटाइजेशन, वीड आउट, डिस्पोजल एवं कार्यालय की साफ-सफाई संबंधी गतिविधियों आदि का निरीक्षण किया ।

31.10-06.11.2022 कार्यालय में सर्तकता जागरूकता सप्ताह मनाया गया । कार्यालय प्रमुख डा. बी.सिंह, उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक ने सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को शपथ दिलाई एवं कार्यालय परिसर में पोस्टर व बैनर लगाये गये । आगंतुको को भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु जागरूक किया गया ।

03.01.2023 कार्यालय मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, नागपुर द्वारा वेबेक्स के माध्यम से रिटेल आउटलेट पर इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग के संबंध में चर्चा की गई । श्री डी.वी.सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक ने उक्त चर्चा में कार्यालय की ओर से प्रतिभाग किया ।

<u>कार्यालय उप मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, देहरादून में आयोजित विविध गतिविधियों की झलकियाँ</u>